ईंट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक तकनीकी-सामाजिक पहल

परियोजना समूह

द एनर्जी एण्ड रिसोर्सेस इन्स्टीट्यूट (TERI)

राकेश जौहरी
सचिन कुमार (2004 से)
समीर मैथिल (2006 तक)
जयंत मित्रा (2006 तक)
गिरीश सेठी (2006 से)
अनिल कुमार श्रीवास्तव (2003 तक)
एन. वासुदेवन

पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी उत्थान समिति (PEPUS)

अरविन्द कुमार दूबे (2006 से)
हरिराम
कमला
राजकुमार
स्वाति ओझा (2004 से 2007)
रामू राय (2003 से)
जावेद समदानी (2004 तक)

लोकमित्र

लालबहादुर
विनोद कुमार चौबे (2006 से)
राजेश कुमार
कलावती श्रीवास्तव (2002 से)
संतोष राय (2005 तक)
छतरपाल यादव (2004 से)
शिवकुमार यादव (2004 से)

विद्या आश्रम

सुनील सहस्रबुद्धे

स्विस डेवलपमेन्ट कोऑपरेशन (SDC)

अमिताभ बेहार (2003 से 2004)
जीन बर्नार्ड डुबोय
जोसेफ इम्फेल्ड (2000 से 2005)
वीणा जोशी
टेरेसा खन्ना (2004 से 2006)
राजिन्दर निज्जर (2002)
कुर्ट फगले (2000 से 2005)

ईंट–भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक तकनीकी–सामाजिक पहल

© द एनर्जी एण्ड रिसोर्सेस इन्स्टीट्यूट और
स्विस एजेन्सी फॉर डेवलपमेन्ट एण्ड कोऑपरेशन, 2009

आई.एस.बी.एन 978–81–7993–232–2

शैक्षणिक और गैर–मुनाफा उद्देश्यों के लिए, कोई विशेष अनुमति प्राप्त किये बिना और स्रोत बताते हुये यह पूरा दस्तावेज अथवा इसका कोई हिस्सा किसी भी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। SDC और TERI चाहेंगे कि इस दस्तावेज को स्रोत के रूप में इस्तेमाल करते हुए जो भी प्रकाशन किया जाय उसकी एक प्रति उन्हें भी मिले।

वर्णनकर्त्ता :
आर. पी. सुब्रमणियन् (इंगलिश)
सुनील सहस्रबुद्धे (अंग्रेजी–हिन्दी अनुवाद)

प्रकाशक :
TERI प्रेस
द एनर्जी एण्ड रिसोर्सेस इन्स्टीट्यूट
दरबारी सेठ ब्लाक
IHC काम्प्लेक्स, लोदी रोड
नई दिल्ली–110 003
भारत

फोन 24682100 / 41504900
फैक्स 24682144 / 24682145
भारत +91, दिल्ली (0)11
ई–मेल teripress@TERI.res.in
वेब www.teriin.org

आई. जी. प्रिन्टर्स, नई दिल्ली, भारत में प्रकाशित

ABBREVIATIONS

TERI	:	The Energy & Resources Institute ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान
SDC	:	Swiss Agency for Development & Co-operation स्विट्जरलैण्ड का विकास एवं सहयोग संस्थान
PEPUS	:	Paryavaran Evam Proudyogiki Utthan Samiti पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी उत्थान समिति
VSBK	:	Vertical Shaft Brick Kiln खड़ी भट्ठी का ईंट भट्ठा
BTK	:	Bulls Trench Kiln बुल्स ट्रेन्च किल्न : उत्तर भारत का स्थिर चिमनी वाला ईंट भट्ठा
IBP	:	India Brick Project भारतीय ईंट परियोजना
TSI	:	Techno-Social Integration तकनीकी–सामाजिक एकीकरण
BPVS	:	Bhattha Parivar Vikas Sangathan भट्ठा परिवार विकास संगठन
SDM	:	Sub-Divisional Magistrate सब–डिवीजनल मजिस्ट्रेट
BOP	:	Best Operating Practices अभ्यास के उत्तम तरीके
NGO	:	Non-Government Organisation गैर–सरकारी संगठन
SIDBI	:	Small Industries Development Bank of India लघु उद्योग विकास भारतीय बैंक

विषय–सूची

आमुख 5

परिचय 6

जलाई की ज़िन्दगी 6

पृष्ठभूमि 7

हस्तक्षेप 12

तकनीकी–सामाजिक एकीकरण का मार्ग 12

वाराणसी अनुभव 15

समुदाय स्तर का कार्य 16

संगठन : एक नया विचार 17

शुरुआती काम 18

भट्ठा परिवार विकास संगठन : शक्ति के बीज 20

ग्रामस्तरीय मुद्दे 20

भट्ठे से सम्बन्धित मुद्दे 21

जड़ें मजबूत करना: ज्ञान आधारित गतिविधियाँ 25

क्षमता विकास 27

कारीगरों के मालिकाने में छोटा ईंट भट्ठा 30

मनोरमा–हरिशरन का VSBK 31

इन्दरजीत का VSBK 32

ग्रामीण ईंट बाजार अध्ययन 33

आगे की चुनौतियाँ 35

आमुख

ईंट उद्योग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। कुल मिलाकर लगभग एक लाख छोटे ईंट उद्योग हर साल चौदह हजार करोड़ (1.4 खरब) ईंटें बनाते हैं। ईंट बनाने के महीनों में (नवम्बर से जून) इन इकाइयों में काम करके लगभग एक करोड़ लोग जीविकोपार्जन करते हैं। ये ज्यादातर प्रवासी मजदूर हैं जो गर्मी के महीनों में इन बेहद गर्म भट्ठियों पर काम करने के लिये मजबूर होते हैं, खासकर इसलिये भी क्योंकि उन दिनों खेती का कोई काम नहीं होता। दूसरी ओर, ईंट उद्योग बहुत अधिक ऊर्जा माँगता है। हर साल अनुमानतः 2.4 करोड़ टन कोयला और बड़ी मात्रा में खर–पतवार इसमें खप जाता है और इससे 4.2 करोड़ टन कार्बन–डाइ–आक्साइड (CO_2) निकलकर वायुमण्डल में मिल जाती है।

बुनियादी ढाँचे की, गृह निर्माण क्षेत्र की और व्यावसायिक क्षेत्र की बढ़ती जरूरतों के चलते, ईंट उद्योग के मार्फत मिट्टी और कोयले जैसे संसाधनों के इस्तेमाल पर दबाव बढ़ता ही जा रहा है। इससे प्रदूषण भी बढ़ता है। इन दबावों से मुकाबला करने के लिये नई प्रौद्योगिकी तथा वैकल्पिक कम संसाधनों से बने उत्पादों की जरूरत है। लेकिन चूँकि ईंट उद्योग में दसों लाख ग्रामीणों को काम मिलता है, इसलिये यह जरूरी है कि नई प्रौद्योगिकी उनका काम न छीने, बल्कि कारीगरों के परम्परागत ज्ञान और हुनर को ही विकसित कर उसे स्थानीय परिस्थितियों और अपनी जरूरतों के अनुकूल ढाला जाय। अन्य छोटे उद्योगों की तरह ही भारतीय ईंट उद्योग परिवर्तन का बहुत विरोध करता है। चुनौती ही यह है कि परिवर्तन के अनुकूल उद्योग अपने को यूँ ढालें कि मजदूरों, उद्यमियों और अन्य जुड़े हुए व्यवसायियों व उपभोक्ताओं सभी के हितों की रक्षा हो सके।

1993 में SDC के समर्थन से TERI ने एक ऐसे प्रोजेक्ट में हाथ डाला जिसका उद्देश्य भारतीय ईंट उद्योग में एक साफ और अधिक ऊर्जा दक्षता की प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना था। यह थी एक छोटे खड़े ईंट भट्ठे (VSBK) की प्रौद्योगिकी। इसके साथ ही TERI ने बड़े ईंट उद्योग में प्रदूषण कम करने और ऊर्जा दक्षता बढ़ाने का काम जारी रखा। यह काम बड़े ईंट निर्माताओं और उनके भट्ठों (बुल्स ट्रेन्च किल्न) के साथ होता था। यह प्रौद्योगिकी भारतीय ईंट उद्योग में सबसे विस्तृत रूप में इस्तेमाल होती है। उत्तर भारत के भट्ठों पर जलाई मिस्त्रियों के साथ नजदीक से काम करते हुए TERI को यह पता लगा कि लगभग सभी जलाई मिस्त्री उत्तर प्रदेश के तीन पड़ोसी जिलों से आते हैं। सन् 2000 के बाद से TERI-SDC सहयोग से हो रहे ईंट क्षेत्र के काम में TERI का प्रमुख कार्य उन आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों में सुधार का हो गया जिनमें जलाई मिस्त्री और उनके परिवार रहते और काम करते थे। दो तृणमूल स्तर की संस्थाओं के सहयोग में TERI की गतिविधियाँ तीन समानान्तर रास्तों पर आगे बढ़ी हैं।

1 सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिये क्षमता विकास कार्यक्रम, जो जलाई मिस्त्रियों की तकनीकी दक्षता में सुधार लाये और उन्हें अपने मालिकों से बेहतर शर्तों के लिये सौदे में सक्षम बनाये।

2 कारीगर के मालिकाने में छोटे–खड़े भट्ठे (VSBK) को बढ़ावा देना जो ग्रामीण स्तर पर पारिवारिक आय में वृद्धि करे।

3 ईंट भट्ठा कारीगरों (जलाई वालों) के समुदाय में संगठन बनाना और एकता पर आधारित दखल के जरिये सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

इन वर्षों में भट्ठा कारीगरों के संगठन की सदस्यता और उसके प्रभाव, दोनों में विस्तार हुआ है। अब इसकी पहुँच लगभग 20,000 कारीगरों और उनके परिवारों तक है। यह संगठन उनके गाँवों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का उत्प्रेरक साबित हो रहा है। यह ज्ञान–विनिमय और सामाजिक व आर्थिक क्षमता विकास की पहल का माध्यम अथवा औजार बन सकता है।

यह पुस्तिका, TERI और सहभागी संगठनों को ईंट उद्योग के भट्ठा कारीगरों के समुदाय के साथ कार्य में जो अनुभव हुए, उनका सार प्रस्तुत करती है। ईंट उद्योग में सकारात्मक परिवर्तन के प्रमुख घटक हैं : प्रौद्योगिकी विकास, अनुसंधान एवं विकास, क्षमता विकास कार्यक्रम और भट्ठा कारीगर समुदाय का बहुमुखी सामाजिक–आर्थिक विकास। इन सभी क्षेत्रों में परिवर्तन का स्रोत अथवा उसकी चाभी पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में है, जहाँ से पूरे उत्तर भारत के लगभग सभी भट्ठा कारीगर आते हैं।

—आर. के. पचौरी, डाइरेक्टर जनरल, TERI

परिचय

जलाई की जिन्दगी

'मेरा नाम लाल बहादुर है। मैं थरिया का रहने वाला हूँ। थरिया पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले का एक छोटा–सा गाँव है। इस जिले में लभग 250 ईंट भट्ठे हैं, जिनमें से अधिकांश का मालिकाना जमींदारों या बड़ा धन्धा करने वालों के पास है। चार से छः कारीगरों या जलाईवालों का समूह सामान्यतः एक ईंट भट्ठा चलाता है। वे सब एक जलाई मिस्त्री के मातहत काम करते हैं। मेरे गाँव के अधिकतर आदमी जलाई वाले हैं। वे आसपास के भट्ठों से लेकर पंजाब और बंगाल तक के भट्ठों पर आग सम्हालने का काम करते हैं। मेरे पिता एक जलाई मिस्त्री थे। बचपन से ही मैं जानता था कि बड़ा होकर मैं भी एक जलाईवाला बनूँगा। यह हमारी बिरादरी की परम्परा है।

'गाँव में जिन्दगी कठिन थी। मेरे पिताजी की मजदूरी में मुश्किल से घर चलता था। और बुरी बात यह थी कि वे छः से आठ महीना घर से दूर भट्ठों पर रहते थे। वर्षा ऋतु खत्म होने के बाद से गर्मियों के अन्त तक बाहर ही रहते थे। उनके न होने से मेरी माँ के लिये रोजमर्रे का घरेलू प्रबन्ध बड़ा कठिन हुआ करता था। हम लोगों के पास थोड़ी–सी जमीन थी, जिस पर हम दाल और मौसमी सब्जियाँ उगाते थे। लेकिन अपना उत्पादन बेचकर हम जो कमाते थे उससे कुछ महीनों ही काम चल पाता था। और मेरे पिता जो भट्ठे पर कमाते थे, उससे भी हम कुछ नहीं बचा पाते थे। गरम और सूखे मौसम में पानी न होने के कारण हमारी जमीन पर कुछ पैदा नहीं होता था। इसलिये इन महीनों में कमाई के और तरीके खोजने पड़ते थे या फिर महाजनों से उधार लेना पड़ता था।

'मैं बचपन से ही आस–पास के खेतों पर काम करता था। ये खेत जमींदारों के हुआ करते थे। एक बार जब गर्मी बहुत ज्यादा थी, एक ठेकेदार आया और यह खबर लाया कि अत्यधिक गरमी की वजह से आस–पास के भट्ठों से बड़ी तादाद में मजदूर काम छोड़कर जा रहे हैं। भट्ठों के मालिक नये लोगों की खोज में हैं। तब, मेरी माँ की चिन्ता के बावजूद मैंने एक भट्ठे पर एक जलाई वाले के सहायक के रूप में काम शुरु किया। मेरी उम्र तब 14–15 साल की होगी। शुरु में मुझे कोयले का काम सिखाया गया। काम कठिन था लेकिन मजदूरी 7 रुपये की खेत मजदूरी से बहुत अधिक थी। तब से मैं हर साल भट्ठे पर काम करने जाने लगा। धीरे–धीरे दूसरे जलाईवालों के काम को देखते हुए मैं आग सम्भालना सीख गया। कभी कोई वरिष्ठ कारीगर कुछ दिनों के लिये भट्ठे से चला जाता तो मुझे जिम्मेदारी का काम भी मिलता। इस तरह कुछ वर्षों में ईंट बनाने का जलाई का काम सीख गया।

'भट्ठे पर की जिन्दगी बहुत ही कठिन होती है। हम जलाई का काम करने वाले अक्षरशः भट्ठे पर ही रहते हैं। आराम के लिये वहीं एक छोटा–सा झोपड़ा होता है, जहाँ हम बारी–बारी से एक लकड़ी की बेंच पर थोड़ी नींद ले लेते हैं। रोज 8–12 घण्टे हमें हर 15 मिनट पर आग ठीक करनी होती है। यह काम बिना किसी अवकाश के महीनों चलता है। अत्यधिक गरम हवा में हम साँस लेते हैं, गरमी के महीनों में 45^0 सेल्सियस के ऊपर। पैरों के नीचे से हमेशा भट्ठे के अन्दर की गरमी ऊपर उठती महसूस होती है। पैर में लकड़ी के चप्पल/खड़ाऊँ पहनने पड़ते हैं। प्लास्टिक या रबड़ पिघल जाता है। धूल, गरम राख और धुआँ लगातार चक्कर लगाता रहता है, जिससे सांस लेना मुश्किल हो जाता है, गला और नाक जलने लगते हैं.....।

'इस सबसे ज्यादा परेशान करने वाली चीज शायद अकेलापन है। पथेरे और ढुलाई करने वाले आमतौर पर अपने परिवारों के साथ आते हैं। वे हमसे भी खराब परिस्थितियों में रहते और काम करते हैं, लेकिन काम के बाद वे जब अपनी झोपड़ी में जाते हैं, वहाँ कोई होता है, वे कम–से–कम और लोगों के साथ काम करते हैं। जलाई का काम करने वाला भट्ठे पर अकेला जाता है, और अकेला ही काम करता है। अपनी कार्यावधि के बाद वह इतना थक जाता है कि ज्यादा–से–ज्यादा किसी तरह भट्ठे के ऊपर ही बनी अपनी झोपड़ी तक पहुँच पाता है और दो रोटी खाकर सो जाता है..... तब तक जब उसे फिर से काम पर जाने के लिये कोई उठा देता है।'

लाल बहादुर की कहानी ही उन हजारों भट्ठा कारीगरों की कहानी है जो उत्तर भारत में भट्ठों पर जलाई का प्रबन्ध करते हैं। आज लाल बहादुर जलाई का काम नहीं करते। वे एक संस्था के कार्यकर्त्ता हैं, जो TERI के साथ सहभागिता में पूर्वी उत्तर प्रदेश के ईंट निर्माण क्षेत्र के कारीगरों की सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति में सुधार का कार्य कर रही है। यह पुस्तक TERI और सहभागी संस्थाओं के अनुभवों और उनके कार्य के नतीजों के बारे में बताती है।

पृष्ठभूमि

भारत का ईंट उद्योग बड़ी मात्रा में ऊर्जा का इस्तेमाल करता है और प्रदूषण करने वाली गैस और कण वातावरण में छोड़ता है।[1] दूसरी ओर लोगों को रोजगार देने में और लाखों लोगों, विशेषकर ग्रामीण गरीबों, के लिये एक आय के स्रोत के रूप में ईंट उद्योग की लघु इकाइयाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ईंट बनाने के सीजन में करीब 80 लाख से 1 करोड़ कामगार काम पर लगे रहते हैं। ज्यादातर छोटे किसान और खेत मजदूर पृष्ठभूमि के प्रवासी कामगार होते हैं। उनकी जमीनों पर गर्मियों के महीनों में कोई काम नहीं होता। इसलिये वे मजदूर, पथेरा या जलाईवाला के रूप में दूर–दूर तक जाकर ईंट उद्योग में काम खोजते हैं। इस तरह ईंट उद्योग कृषि के चक्रों और मानसून के साथ तालमेल में चलता है। भारत में ईंट बनाने का सीजन नवम्बर में शुरु होता है और अगले साल बारिश शुरु होने तक, जून–जुलाई तक, चलता है।

भारत में लगभग एक लाख ईंट भट्ठे हैं, जिनमें हर साल लगभग 140 अरब ईंटें बनती हैं। इनमें से अधिकांश पंजाब से आसाम के बीच उत्तर और उत्तर–पूर्व के समतल इलाकों में BTK (बुल्स ट्रेन्च किल्न) भट्ठों पर बनती हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में, खासकर रायबरेली , प्रतापगढ़, इलाहाबाद, वाराणसी जिलों की मिट्टी विशेष रूप से चिकनी और चिपकने वाली मिट्टी है, इसलिए इन इलाकों में BTK भट्ठों की संख्या बहुत अधिक है।

ईंटें कैसे बनती हैं ?

आज भी ईंट उन्हीं सिद्धान्तों और तरीकों के आधार पर बनाई जाती है जिनका प्रयोग हजारों साल पहले होता था। खाली छोड़े खेतों से ऊपरी मिट्टी निकाल कर कच्ची ईंटें पाथी जाती हैं, जिन्हें सुखाकर भट्ठे में पकाया जाता है। पकाई 800^0 से 1100^0 सेल्सियस के बीच होती है। इस ऊँचे तापमान पर ईंट को कुछ समय रहना होता है, फिर उसे ठण्डा होने दिया जाता है। जो बनता है वही ईंट है, जिससे हम सब परिचित हैं। (चित्र–1)

उत्तर भारत में BTK नाम का भट्ठा सबसे लोकप्रिय है। मूलरूप में BTK एक गोल अथवा अण्डाकार गड्ढा होता है, जिसमें ईंटें तरतीब से लगाई जाती हैं और पकाई जाती हैं। आग ईंटों के चट्टों में एक ओर से दूसरी ओर चलती है। पकी हुई ईंटों को निकालना और कच्ची ईंटों को गड्ढे में लगाना, ये दोनों काम लगातार चलते रहते हैं। एक BTK भट्ठे से रोज लगभग 15,000 से 50,000 ईंटें पककर निकलती हैं। चिमनी एक जगह स्थिर हो सकती है या फिर उसकी जगह बदलती रहती है। चालित चिमनी के BTK भट्ठे स्थिर चिमनी वालों की तुलना में बहुत अधिक प्रदूषण पैदा करते हैं। इसे मद्देनज़र रखते हुये पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने चालित चिमनी के BTK भट्ठों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। (चित्र 2,3)।

SDC ने 1993 में भारतीय लघु और कुटीर उद्योगों में ऊर्जा की खपत की पद्धति पर अध्ययन की पहल की। इसी के साथ TERI का ईंट उद्योग के साथ का काम शुरु हुआ। इस अध्ययन के नतीजों को 1994 के दिसम्बर में TERI व SDC के द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। उस पर विचार हुआ और ईंट उद्योग के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुझाव व सिफारिशें सामने आईं:–

- भारत में ईंट की आपूर्ति की तुलना में माँग बहुत ज्यादा है और यह अन्तर तेजी से बढ़ रहा है। वर्तमान ईंट बनाने की प्रौद्योगिकी से यह अन्तर कम करने के प्रयास से भारत के कोयले और जैव ईंधन के संसाधनों पर माँग बेतहाशा बढ़ेगी। इसलिये वर्तमान भट्ठों की ऊर्जा क्षमता में सुधार एक त्वरित आवश्यकता है।

[1] 2002 में TERI द्वारा किये गये एक अध्ययन के मुताबिक भारत का ईंट उद्योग एक साल में 2.4 करोड़ टन कोयला और बड़ी मात्रा में लकड़ी और कूड़े का प्रयोग करता है। उससे कार्बन–डाइ–ऑक्साइड का अनुमानित वार्शिक उत्सर्जन 4.2 करोड़ टन है।

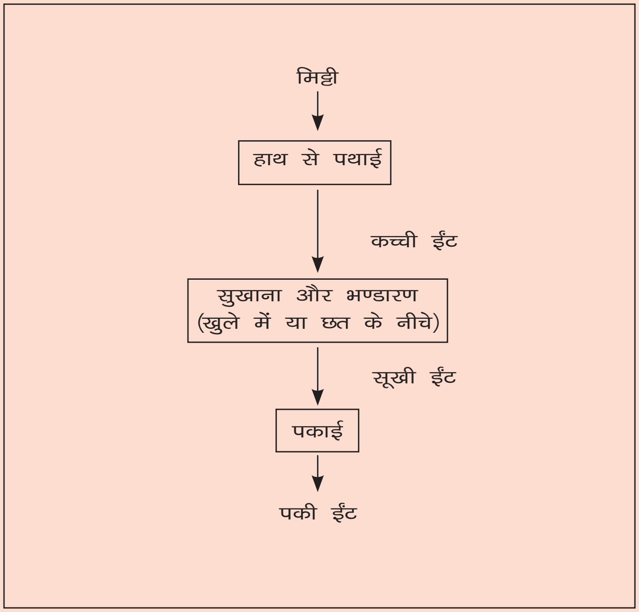

चित्र 1: मिट्टी की ईंट बनाने की विधि

चित्र 2: स्थिर चिमनी बी.टी.के.

चित्र 3: चालित चिमनी बी.टी.के.

- भारत में ईंट निर्माण के लिये चीन में विकसित खड़े भट्ठे (VSBK) की एक विकल्प के रूप में खोज–बीन की जानी चाहिए।

उपरोक्त कार्यशाला के बाद SDC ने VSBK को चीन से भारत लाने के लिये एक परियोजना शुरु की। इस परियोजना में इस प्रौद्योगिकी को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालना था, जिससे VSBK का फैलाव देश के विभिन्न भागों में हो सके। शुरु में परियोजना की सहभागी संस्थायें थीं:– विकास विकल्प (DA-डेवलपमेण्ट आल्टरनेटिव्स) जिसे प्रौद्योगिकी स्थानांतरण का जिम्मा था और TERI जिसे ऊर्जा और पर्यावरण के मानदण्ड लागू करवाने का जिम्मा था। आगे चलकर तीन और सहभागी संस्थायें शामिल हुईं।

- ग्राम विकास, बरहमपुर (उड़ीसा) – समुदाय के स्तर पर प्रौद्योगिकी के साथ काम करने वाली एक संस्था।
- मिट्कॉन (MITCON –महाराष्ट्र इण्डस्ट्रियल टेक्नीकल कन्सल्टेन्सी आर्गनाइजेशन), पुणे– एक औद्योगिक सलाहकार कम्पनी।
- दामले क्ले स्ट्रक्चरल्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे – ईंट प्रौद्योगिकी का एक सलाहकार उद्यम।

हालाँकि परियोजना का शुरुआती दौर प्रौद्योगिकी प्रधान था, SDC ने VSBK को दूरगामी दृष्टिकोण से ईंट उद्योग के कामगार समुदायों के बीच सामाजिक परिवर्तन के एक औजार के रूप में देखा। यह एक ऐसी साफ ऊर्जा क्षमता की प्रौद्योगिकी थी, जो व्यावसायिक दृष्टि से सफल होने के साथ छोटे ईंट निर्माताओं को एक न्यायसंगत विकल्प देती थी।

1995 से 2000 तक 'कार्य के साथ अनुसंधान' का चरण माना गया। TERI ने अन्य सहभागी संस्थाओं को ऊर्जा से सम्बन्धित विषयों में समर्थन दिया और उत्तर भारत के BTK भट्ठों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देष्य था परम्परागत जलाई के अभ्यास का ज्ञान प्राप्त करना जिससे एक अधिक विकसित जलाई का तौर–तरीका बनाया जा सके और मिस्त्रियों तक पहुँचाया जा सके। इस अवधि में TERI ने इस क्षेत्र के कई BTK भट्ठों पर आग के मिस्त्रियों के साथ नजदीकी से काम किया (चित्र–4) और वाराणसी स्थित ईंट निर्माता परिषद के साथ सम्बन्ध बनाये।

यह ईंट निर्माता परिषद पूर्वी उत्तर प्रदेश के बी.टी.के. उद्यमियों के जिला स्तरीय

चित्र 4: बी.टी.के. भट्ठे का अध्ययन करती TERI टीम

संगठनों की परिषद है। इस कार्य के दौरान TERI को जलाई के कारीगरों के ज्ञान और हुनर की समझ बनाने का अवसर मिला। साथ ही वे इस समुदाय के कष्ट से रूबरू हुए– भट्ठे और गाँव दोनों ही स्थानों पर। TERI को यह ज्ञान भी हुआ कि उत्तर भारत के लगभग सभी जलाई कारीगर पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँवों से आते हैं।

प्रवास व भट्ठा कारीगरों का समुदाय

उत्तर भारत के ईंट भट्ठों पर काम करने वाले लगभग सभी कारीगर पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों से आते हैं– प्रतापगढ़, इलाहाबाद, रायबरेली। ये कारीगर भट्ठे पर अपने परिवार के साथ नहीं जाते हैं। इनका काम व्यक्तिगत स्तर पर बेहतरीन हुनर की माँग करता है। जबकि पथेरे और ढुलाई करने वाले कारीगर अधिकतर अपने परिवार के साथ आते हैं। ईंट बनाने के सीजन में ये अपने परिवारों (महिलायें, बच्चे और वृद्ध) को पीछे छोड़कर चले जाते हैं। इनकी अनुपस्थिति में इनके परिवारों का जीवन बड़ा कठिन हो जाता है, खासकर ऐसी परिस्थितियों में जब अपने गाँवों में स्वास्थ्य, सफाई और शिक्षा का बुनियादी सामाजिक ढाँचा बहुत कमजोर हो। महिलाओं को इस पूरे समय अपने परिवार का जिम्मा उठाना पड़ता है। यह बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य होता है, क्योंकि कोई बचत तो होती नहीं है। वे अक्सर पढ़ी–लिखी भी नहीं होतीं और रोजगार के अवसर भी नहीं होते।

जलाई कारीगर को मिस्त्री काम पर ले जाते हैं। ये मिस्त्री भट्ठे चलाने का लम्बा अनुभव रखते हैं और उसमें पारंगत माने जाते हैं। मिस्त्री को भट्ठे का मालिक चुनता है और पेशगी देता है जिससे वह जलाई कारीगरों का समूह तैयार करता है।

ये कारीगर बड़ी कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं (चित्र–5)। वे अक्षरशः भट्ठे के ऊपर ही रहते हैं। हालांकि वे कुशल कारीगरों का काम करते हैं, उनकी मजदूरी काफी कम होती है। भट्ठे पर के काम की मजदूरी मिलने में अक्सर बहुत समय भी लग जाता है और ईंट निर्माण सीजन खत्म होने पर वे बेरोजगार हो जाते हैं; जिनके पास कुछ जमीन है भी, वह बहुत कम होती है, मुश्किल से कुछ बिस्वे (एक बिस्वा = 136 वर्गमीटर = 1/20 बीघा)। सिंचाई की सुव्यवस्था के अभाव में या वैसे भी यह किसी भी परिवार के लिये बहुत कम है। इसलिये भट्ठा कारीगरों के परिवार अक्सर सूद की ऊँची दरों पर स्थानीय महाजनों से उधार लेने के लिये मजबूर होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में उनके परिवार के बच्चों का कम उम्र से ही भट्ठों पर काम करना अनिवार्य–सा हो जाता है और गरीबी, प्रवास और संघर्ष की कड़ी की पुनरावृत्ति होती रहती है।

चित्र 5: काम करता हुआ कारीगर

जब दिल पर पत्थर रखते हैं

जब हम मातायें अपने बच्चों को उनके पिता के साथ ईंट भट्ठों पर जाते हुए देखती हैं, तो हमें चिन्ता होती है, डर लगता है। किसी भी माँ को ऐसा लगेगा, लड़कों की उम्र इतनी कम होती है, भट्ठे इतने दूर होते हैं और काम इतना मेहनत भरा और कठिन। फिर भी वे क्या कर सकते हैं? इसलिये हम अपने दिलों पर पत्थर रख कर अपने डर को चुप्पी में छिपा लेते हैं।

–विमला, एक भट्ठा कारीगर की पत्नी, ग्राम–थरिया

सन् 2000 तक विकास विकल्प, ग्राम विकास, मिटकॉन और दामले देश के कई भागों में VSBK चला कर दिखा चुके थे। इसी समय SDC के भारत के कार्यक्रम में रोजगार के नये अवसरों के निर्माण के मार्फत गाँव की गरीबी कम करने की बात का महत्त्व बहुत बढ़ गया। इसलिए SDC ने सहभागी संस्थाओं को सामाजिक कार्य पर जोर देने के लिये कहा; खासकर VSBK को ईंट बनाने की एक लघु इकाई के रूप में बढ़ावा देकर, जो ईंट क्षेत्र के कामगारों की आय में वृद्धि कर सके और उनके जीवन में सुधार हो। SDC की परियोजना का यह चरण 2000 से 2004 तक चला। यह इण्डिया ब्रिक प्रोजेक्ट (IBP) के नाम से जाना गया।

VSBK : छोटा, साफ और कार्यक्षम

VSBK का विकास 1960 के शुरु के वर्षों में चीन के ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ। हेनान विज्ञान अकादमी, सेन्गझो, चीन के ऊर्जा अनुसंधान संस्थान ने 1988 में इसका एक विकसित रूप तैयार किया। मूलतः VSBK एक या अधिक खड़ी भट्ठियों से बना होता है। कोयले के टुकड़ों के साथ कच्ची ईंटें ऊपर से बिछाई जाती हैं। ये ईंटें धीरे–धीरे नीचे की ओर जाती हैं, बीच में आग होती है और नीचे से पकी हुई ईंटें निकाल ली जाती हैं। हवा नीचे से भट्ठी में आती है और पकी हुई ईंटों से ऊष्मा लेते हुए आग के क्षेत्र में प्रवेश करती है। फिर पकाई क्षेत्र से उठने वाली गरम हवा ऊपर की ओर बढ़ती है व कच्ची ईंटों को गरम करते हुए चिमनी से बाहर निकल जाती है। VSBK में एक किलोग्राम ईंट की पकाई में 0.7–1.0 मेगा जूल ऊर्जा लगती है जबकि स्थिर चिमनी BTK में इसी काम के लिये 1.1–1.5 मेगा जूल ऊर्जा लगती है। जाहिर है कि यह अन्तर VSBK में ऊष्मा स्थानांतरण की व्यवस्था के चलते ऊष्मा बेकार न जाने देने के कारण है। यह BTK की तुलना में प्रदूषण भी काफी कम करता है।

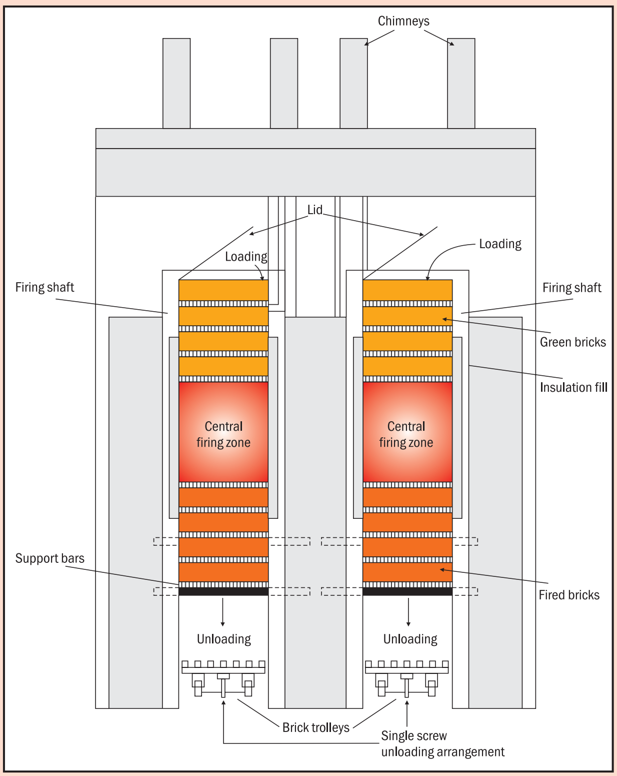

चित्र 6: दो भट्ठियों का VSBK

दखल

IBP के अन्तर्गत सामाजिक कार्य को केन्द्र में लाना परियोजना की सहभागी संस्थाओं के लिये चुनौती के रूप में उभरा। प्रौद्यौगिकी के साथ तृणमूल स्तर पर विकास का काम केवल ग्राम विकास (उड़ीसा) करता था, बाकी संस्थायें जिसमें TERI शामिल था, प्रमुख रूप से प्रौद्योगिकीय रूझान की संस्थायें रहीं। इसलिये TERI के लिये पहला कदम यह बनता था कि वे सामाजिक कार्य के लिये साथ में काम करने के लिए तृणमूल स्तर पर कार्यरत सामाजिक संस्थाओं की खोज करें। चूँकि कार्यानुगत अनुसंधान के चरण में TERI ने जलाई कारीगरों के साथ नजदीक से काम किया था; उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश के भट्ठा कारीगर समुदाय में अपने सामाजिक कार्य का केन्द्र बनाना तय किया ।

सन् 2001 में TERI ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में दो संस्थाओं की पहचान की : पेपुस– पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी उत्थान समिति, इलाहाबाद और लोकमित्र, रायबरेली। पेपुस का प्रमुख कार्य स्त्रियों के सशक्तिकरण का था, जिसे वे व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा सामाजिक व आर्थिक अधिकारों के प्रति जानकारी के विकास के मार्फत करते थे। लोकमित्र का प्रमुख कार्य बच्चों की बेसिक शिक्षा पर रहा। TERI ने इन दो संस्थाओं के बीच तालमेल से भट्ठा कारीगर समुदाय के बीच काम की योजना बनाई। IBP के अन्तर्गत TERI ने VSBK को बढ़ावा देने के लिए दो रास्ते अपनाये।

1. VSBK की पहचान पूर्वी उत्तर प्रदेश के लगभग 4000 चालित चिमनी BTK के संभावित विकल्प के रूप में की गई। इन भट्ठों को 30 जून, 2001 तक सरकार के उत्सर्जन मानकों का पालन करके दिखाना था या फिर स्थिर चिमनी का विकल्प चुनना था। अधिकांश चालित चिमनी BTK छोटे थे और प्रतिदिन 15,000–20,000 ईंटें बनाते थे। उत्पादन का यह स्तर समानांतर VSBK चलाकर भी प्राप्त किया जा सकता था। TERI ने तय किया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक ऐसा 'अगुआ उद्यमी' खोजा जाय जो VSBK को सफलता से चलाकर दिखाये और अन्य चालित चिमनी BTK उद्यमियों द्वारा इसे अपनाने का रास्ता खोले।
2. VSBK को एक ऐसे भट्ठे के रूप में देखा गया जिसे भट्ठा मिस्त्री अपने मालिकाने में गाँव में ही चला सकते थे। यह प्रयास कारीगरों के गाँवों में TERI और सहभागी संस्थाओं द्वारा शुरु किये गये सामाजिक कार्य का ही हिस्सा था।

तकनीकी –सामाजिक एकीकरण का रास्ता

जहाँ एक तरफ TERI व IBP की अन्य सहभागी संस्थायें VSBK के फैलाव का वातावरण तैयार कर रहे थे, तभी SDC ने सामाजिक कार्य के सम्बन्ध में उनकी समझ बढ़ाने की पहल ली। सन् 2000 में SDC ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में सामाजिक कार्यों में कार्यरत श्री सुनील सहस्रबुद्धे को IBP के सामाजिक कार्यक्षेत्र का सलाहकार बनाया। श्री सुनील सहस्रबुद्धे ने ईंट कामगारों की 'शक्ति' और 'पहल' को केन्द्र में रखते हुए कार्य योजना बनाई। शक्ति मूलतः उनके परम्परागत ज्ञान में देखी गई। पहल को शक्ति के ही अभिव्यक्त रूप में समझा गया। समान किन्तु अपने विशेष ज्ञान, व्यावसायिक हुनर और मेहनत भरा काम लगातार करने की क्षमता के आधार पर सामुदायिक एकता में इसकी खास अभिव्यक्ति देखी जा सकती थी। श्री सहस्रबुद्धे का कहना था कि समस्याओं को सुलझाने का दृष्टिकोण सामाजिक कार्य में प्रौद्योगिकी का प्रयोग करता है और सामान्य तौर पर इसमें लोक ज्ञान को कोई स्थान नहीं मिलता। परियोजना की सहभागी संस्थाओं को वह रास्ता चुनना चाहिये जिसमें समुदाय की ताकत और पहल को मान्यता दी जाती है।

इन विचारों पर SDC और परियोजना सहभागियों ने कार्यशालाओं के जरिये विस्तृत मंथन किया, जिसका नतीजा एक ऐसी कार्यदृष्टि में हुआ जिसे 'तकनीकी–सामाजिक एकीकरण' (TSI- टेक्नो सोशल इन्टीग्रेशन) का नाम दिया गया। TERI ने इस दृष्टिकोण को दो बुनियादी कार्यक्षेत्रों के मार्फत परिभाषित किया, जिस पर सहभागी संस्थाओं की एक मोटी सहमति रही।

1. चयनित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय दखल से समाज का हित, विशेषकर असुरक्षित और कमजोर समूहों का।
2. चयनित क्षेत्रों में सामाजिक दखल से 'समान हित' को बढ़ावा देना, यानि वे गतिविधियाँ जो कामगारों और उनके परिवारों को सीधे लाभ पहुँचाती हों।

TSI की दृष्टि का अर्थ यह था कि सभी सहभागी चार समानांतर रेखाओं पर समुदायों के साथ काम करें , जिससे उनके दखल प्रभावी और अर्थपूर्ण बनें।

- कामगारों के वर्तमान ज्ञान का अध्ययन।
- राहत के कार्यों का समर्थन व उनपर वार्ता।
- VSBK का वित्तीय और तकनीकी दृष्टि से लघुकरण।
- सभी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी।

TSI: एक गतिशील विकासोन्मुख प्रक्रिया

ज्ञान गरीबों की शक्ति का केन्द्र है। मजदूरों और कारीगरों का व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों ही स्तर पर शक्ति का ताना–बाना ज्ञान के ही इर्द–गिर्द बनता है। हुनर, अभ्यास, पहल, नैतिक मूल्य और संगठनात्मक एकता ज्ञान के ही धागे से आपस में गुँथे होते हैं। ऐसी स्थिति में गरीबी दूर करने की किसी भी बाहरी पहल को वर्तमान सामुदायिक ज्ञान के साथ तालमेल बैठाना जरूरी है, तभी वह लोगों की अपनी पहल का रूप ले सकती है। और तभी उसे लम्बे समय तक सफलता से जारी रखा जा सकता है। यह विशेष रूप से प्रौद्योगिकीय दखल को लागू होता है क्योंकि उनका स्रोत अक्सर दूरस्थ व परकीय परिस्थितियों में होता है।

अतः प्रौद्योगिकी को गरीब का पक्षधर होना चाहिए। इसका मतलब केवल सस्ता होना नहीं है; उसे स्थानीय परम्पराओं और अभ्यासों से तालमेल बैठाना जरूरी है, एक अर्थ में उसे वर्तमान ज्ञान और नये ज्ञान के एकीकरण में बसना और विकसित होना होता है। यही TSI की दृष्टि है। इसलिये TSI कोई उद्देष्य नहीं है, अपितु यह एक गतिशील प्रक्रिया है।

TSI का गरीबों के लिये विशेष महत्त्व है। अक्सर ऐसे समूहों के पास प्रकृति और प्राकृतिक क्रियाओं का ज्ञान और उससे सम्बन्धित कौशल होता है। लेकिन पीढ़ियों के सामाजिक और आर्थिक भेदभाव के चलते ये अपनी अभिव्यक्ति की ताकत खो बैठे हैं। TSI वह रास्ता खोलता है जिसमें इन शक्तियों को सामने लाया जा सके और जरूरत के मुताबिक नये ज्ञान को आत्मसात् कर सामाजिक–आर्थिक सुधार किया जा सके।

(IBP में TSI ड्राफ्ट रिपोर्ट से लिया गया)

TSI दृष्टिकोण की यह माँग थी कि आगे की योजनायें बनाने में अपने विचारों का साँचा बदला जाय। TERI और अन्य सहभागियों के लिये यह एक चुनौती थी, क्योंकि उन्हें 'समस्याओं के हल' की दृष्टि से काम करने की आदत थी। इसलिये SDC ने परियोजना के सहभागियों में इस नई समझ और संवेदना के विकास के लिये 2001 से 2003 के बीच कार्यशालाओं की एक श्रृंखला का आयोजन किया। इन्हीं में TSI के विचार के साथ उन्हें अपनी योजनायें बनाना और नये ढंग से लागू करना सीखना था। इसी काल में VSBK के लघुकरण में मार्गदर्शन की कई बैठकें आयोजित हुईं।

ईट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

TSI की अपनी समझ में विकास के साथ TERI और उसकी सहभागी संस्थाओं ने अपने विश्वविद्यालय से प्राप्त वैज्ञानिक ज्ञान और कारीगर समुदाय के अनुभव पर आधारित पारम्परिक व अनौपचारिक ज्ञान के बीच सघन रिश्ते कैसे बनें, इसकी खोज शुरु कर दी। इस तरह वर्तमान सामुदायिक ज्ञान के मूल्य की पहचान, एक–दूसरे से सीखने और ज्ञान को बाँटने के प्रति खुलेपन की दृष्टि, ये सहभागी संस्थाओं की गतिविधियों के मार्गदर्शक विचार बने।

समझ और संवेदना कार्यशालायें

ऐसी तीन कार्यशालायें IBP के परियोजना सहभागियों के लिये आयोजित की गईं। हर कार्यशाला के लिये विशेष जानकार बुलाये गये। इनमें सामाजिक कार्यकर्त्ता, प्रबन्धकीय सलाहकार, शैक्षणिक संस्थानों के प्रोफेसर और सामाजिक आन्दोलन के अगुआ शामिल थे। हर कार्यशाला में सहभागी संस्थाओं से लगभग 35–40 भागीदार आये।

1–3 नवम्बर, 2001 को ताराग्राम में पहली कार्यशाला हुई। परम्परागत अनौपचारिक ज्ञान से परिचय कराया गया। यह बताया गया कि इसमें कितनी गहराई और फैलाव है, यह कैसे पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता है और किस तरह अपने को नवीनीकृत करता रहता है। इस बात पर जोर दिया गया कि भागीदारों को अपनी दृष्टि और अनुभव विश्वविद्यालयों से सीखे ज्ञान में बाँधने नहीं चाहिए और उन्हें इस परम्परागत ज्ञान से सीखने का खुलापन दिखाना चाहिये।

22–23 जनवरी, 2002 को रायबरेली में दूसरी कार्यशाला हुई। इसमें विचार के विषय थे मजदूरों की आपसी एकता और उनके जीवन पर स्थानीय बाजार का प्रभाव। इस कार्यशाला में सामुदायिक शक्ति और पहल को संदर्भ बनाया गया। यह बताया गया कि इस शक्ति और पहल के आकार लेने के रास्ते संगठन और स्थानीय बाजार से होकर गुजरते हैं। भागीदारों ने यह सीखा कि उन्हें अपनी ताकत के हिसाब से समस्याओं की खोज नहीं करनी चाहिये, बल्कि उन्हें कारीगरों के समुदाय की छिपी हुई ताकतें और संभावित पहल पहचानने की कोशिश करनी चाहिये और इस दृष्टि से विशेषकर स्त्रियों पर ध्यान दिया जाना चाहिये। समुदाय की जरूरतों के संदर्भ में इन ताकतों और पहलों का खुलकर गति में आना महत्त्वपूर्ण है।

तीसरी कार्यशाला 26–27 फरवरी 2003 को ताराग्राम में हुई, जिसमें TSI को मानवीय और संस्थागत विकास की चौखट में रखने के प्रयास हुये। इसमें सामाजिक और तकनीकी परिवर्तनों की एकीकृत समझ बनाने व विकास कार्य में इस एकीकृत दृष्टि का इस्तेमाल करने पर जोर दिया गया।

सीखने के तरीके

सीखने के कई तरीके होते हैं। एक अनुभवी जलाई कारीगर भट्ठे को छूकर कहता है : 'हाँ, इसकी गरमी सही है... बहुत अच्छी ईंटें निकलेंगी!' और हर बार उसकी बात सही निकलती है।

हमारी परियोजना टीम को ऐसा कोई अनुमान लगाने के पहले थर्मोकपल से भट्ठे का तापमान नापना पड़ता है। बात यह है कि कारीगर और इंजीनियर एक ही चीज का परीक्षण कर रहे हैं, वही प्रक्रिया है, और वे एक ही नतीजे पर पहुँच रहे हैं। बात केवल इतनी है कि इस्तेमाल किये गये तरीके व औजार अलग हैं... वर्णन करने की भाषा भी अलग है। इसीलिये इस काम में समय के साथ हमने परम्परागत ज्ञान को पहचानना और सम्मान देना सीखा है।

–एन. वासुदेवन, TERI

वाराणसी अनुभव

IBP के अन्तर्गत TERI ने अपनी गतिविधियाँ वाराणसी से शुरु कीं, जो पूर्वी उत्तर प्रदेश के बीच गंगा नदी के तट पर बसा है। इस क्षेत्र में सबसे ऊँची गुणवत्ता की चिकनी मिट्टी मिलती है। इसलिये यहाँ BTK भट्ठों का घनत्व देश के किसी भी और इलाके की तुलना में ज्यादा है। कार्यानुगत अनुसंधान के दौरान TERI ने श्री कमलाकांत पाण्डेय से अच्छे सम्बन्ध बनाये थे। पाण्डेय जी वाराणसी के एक जाने–माने ईंट निर्माता हैं। वे तब अखिल भारतीय ईंट व खपड़ा निर्माता संघ के उपाध्यक्ष थे और पूर्वी उत्तर प्रदेश के ईंट निर्माता परिषद के अध्यक्ष। पाण्डेय जी का एक चालित चिमनी का भट्ठा था और वे ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिये बहुत उत्सुक रहते थे, जो उस क्षेत्र के ईंट उद्योग को फायदा पहुँचाये। ये फायदा वे तकनीक व काम करने की परिस्थितियों में सुधार दोनों ही के रूप में देखते थे। इस सबके चलते, वे VSBK के लिये एक आदर्श अगुआ 'उद्यमी' बनते थे।

फरवरी, 2000 में TERI और ईंट निर्माता परिषद ने संयुक्त रूप से वाराणसी में 'ईंट उद्योग में प्रदूषण कम करने और ऊर्जा बचाने' के विषय पर एक महत्त्वपूर्ण गोष्ठी आयोजित की (चित्र–7)। इस गोष्ठी में चालित चिमनी BTK वालों ने जून 2001 की सरकारी तारीख के पहले स्थिर चिमनी में अपने उद्योग को बदल देने में आ रही कठिनाइयों को सामने रखा। इस गोष्ठी ने TERI को भी यह मौका दिया कि वह चालित चिमनी BTK वालों के सामने VSBK को एक स्वच्छ व ऊँची ऊर्जा कार्यक्षमता के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर सके।

चित्र 7: वाराणसी में ईंट गोष्ठी, फरवरी, 2000

पाण्डेय जी का VSBK फरवरी 2001 में बनकर पूरा हुआ (चित्र–8) लेकिन TERI समूह को यह भट्ठा चलाने में बराबर दिक्कतें आती रहीं और इस भट्ठे की ईंटें उस क्षेत्र की BTK की अव्वल ईंटों की तुलना में खराब होती थीं। TERI ने विकास विकल्प के साथ मिलकर ईंटों की गुणवत्ता में कुछ सुधार लाया – किन्तु VSBK की ईंटें स्थिर चिमनी BTK की ईंटों की बराबरी न कर सकीं और बाजार में उसे कम दाम मिलते रहे। नुकसान बढ़ते जाने के कारण पाण्डेय जी ने अन्ततः 2004 में अपना VSBK बन्द कर दिया। तब तक, किसी और विकल्प के अभाव में, क्षेत्र के सभी चालित चिमनी BTK स्थिर चिमनी BTK में बदल चुके थे। TERI के दृष्टिकोण से VSBK को बड़े पैमाने पर आगे बढ़ाने का मौका हाथ से निकल गया था। फिर भी वाराणसी अनुभव से बहुत–सी सीखें मिलीं।

TERI समूह के सदस्यों, स्थानीय राजगीरों, जलाई वाले कारीगरों और भट्ठे के मुन्शियों ने VSBK को बनाना, चलाना और उसका रख–रखाव करना सीख लिया। उन्होंने मिट्टी के गुणों, पाथने के तरीकों और ईंट की

चित्र 8: वाराणसी का VSBK

गुणवत्ता में इन कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका के बारे में ज्ञान हासिल किया। VSBK प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध में स्थानीय क्षमताओं के इस विकास ने कारीगरों के मालिकाने में VSBK चलाने की संभावना की नींव डाली। इससे TERI समूह को भी कारीगरों के साथ काम करने और पकाई की समस्याओं को सुलझााने के प्रयास करने के मौके मिलते।

TERI ने वाराणसी में और भी कुछ काम हाथ में लिये जिससे उस क्षेत्र के ईंट उद्यमियों के साथ उसके रिश्ते और मजबूत हुये। उदाहरण के लिये उद्यमियों की बहुत समय से यह जरूरत थी कि मिट्टी के गुणों, ईंट की मजबूती और कोयले के परीक्षण की व्यवस्थायें हों। TERI ने SIDBI (लघु उद्योग विकास बैंक) के साथ बात की और उनके आंशिक वित्तीय सहयोग से ईंट निर्माता परिषद के वाराणसी कार्यालय में सितम्बर, 2002 में आधुनिक मशीनों से लैस एक प्रयोगशाला स्थापित की (चित्र 9)। यह व्यवस्था भी की गई कि ईंट निर्माता परिषद के कई सदस्य प्रयोगशाला के इस्तेमाल में दामले से प्रशिक्षण प्राप्त करें।

चित्र 9: ईंट निर्माता परिषद के वाराणसी कार्यालय में बनी प्रयोगशाला

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वाराणसी अनुभव ने उस क्षेत्र में BTK पर कार्य कर रहे कारीगरों के साथ TERI का सम्पर्क बनाकर रखा। कार्यानुगत अनुसंधान के चरण में BTK का अध्ययन करते वक्त और जलाई कारीगरों के साथ काम करते वक्त, TERI ने भट्ठा चलाने के तौर–तरीकों में कुछ महत्त्वपूर्ण किन्तु सरल परिवर्तन करके यह दिखाया था कि उन परिवर्तनों से 5% से 10% तक ईंधन की बचत होती है, ईंट की गुणवत्ता में सुधार होता है और कणों के उत्सर्जन को इतना कम किया जा सकता है कि काम के वातावरण ा में बड़ा सुधार हो जाये। 2001 में वाराणसी में TERI और ईंट निर्माता परिषद ने कारीगरों के लिये अभ्यास के उत्तम तरीकों पर प्रशिक्षण आयोजित किया। यह अपने किस्म का पहला कार्यक्रम था, जिसमें मिट्टी का चुनाव, पाथने के तरीके और पकाई के तौर–तरीके, सभी कुछ सिखाया गया। कारीगरों का प्रतिसाद बहुत अच्छा था और उसके बाद के वर्षों में TERI ने वैसे कई प्रशिक्षण कार्यक्रम किये। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आपसी वार्त्ता और विषय–वस्तु के सार व स्वरूप पर सुझावों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। कारीगरों के पास पारम्परिक ज्ञान व दक्षता का अच्छा भण्डार होता है, जिसके चलते इन प्रशिक्षणों में बड़ा इज़ाफा होता था। इन वार्त्ताओं और साथ में काम करने से TERI समूह के पकाई के तौर–तरीकों के ज्ञान में वृद्धि हुई, वह ज्ञान गहरा हुआ; इसके अलावा अनुसंधान के चरण में कारीगरों के साथ जो विश्वास का रिश्ता बना था वह और मजबूत हुआ। इन सम्बन्धों का नतीजा तब देखने को मिला जब 2002 से पूर्वी उत्तर प्रदेश के जलाई वाले कारीगरों के गाँवों में TERI, पेपुस और लोकमित्र ने मिलकर तकनीकी–सामाजिक एकीकरण के कार्यक्रम हाथ में लिये।

समुदाय स्तर का कार्य

वाराणसी में VSBK के कार्य के साथ ही TERI ने पेपुस और लोकमित्र के साथ मिलकर प्रतापगढ़, रायबरेली और इलाहाबाद जिलों में गाँव के स्तर पर भट्ठा कारीगर समुदाय के बीच काम शुरु किया। उद्देश्य यह था कि तकनीकी–सामाजिक एकीकरण के दृष्टिकोण से कारीगरों और उनके घरों की महिलाओं की खुद की ताकत पहचानी जाय और उनमें जोर भरा जाय, जिससे वे सशक्त होकर गाँव और भट्ठे दोनों स्थानों पर अपने

सामाजिक–आर्थिक अधिकारों का दावा पेश कर सकें। TERI ने अपने तकनीकी संसाधनों और ईंट बनाने के कारीगरों के परम्परागत ज्ञान के सम्मिश्रण के बल पर निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की उम्मीद भी की।

- BTK भट्ठों में उत्तम अभ्यास के तरीके विकसित करके उन्हें बढ़ावा देना।
- कारीगरों की मदद से वाराणसी VSBK की पकाई की समस्याओं का हल ढूँढ़ना।
- VSBK को एक ऐसे उद्योग के रूप में बढ़ावा देना जिसके मालिक कारीगर खुद हों और जो गाँव के स्तर पर चलाया जा सके।

संगठन : एक नया विचार

कारीगर समुदाय के सदस्यों को कैसे संगठित किया जाय इस पर परियोजना सहभागियों ने शुरु से ही विचार–विमर्ष किया और बहस चलाई। ट्रेड यूनियन, जो सक्रिय कार्य और संघर्ष पर आधारित होते हैं, या बिरादरी आधारित समूह, जो सामाजिक भेदभाव के जरिये सीमाओं में बँधे होते हैं, दोनों पर ही विचार किया गया। अन्त में इन दोनों को ही अमान्य करते हुए परियोजना ने एक प्रयोगात्मक रास्ता चुना। एक ऐसा संगठन बनाना तय हुआ जिसमें सब शामिल हो सकते हों, जो पारम्परिक ज्ञान और अभ्यास के जरिये जुड़ाव पैदा करता हो, जिसमें महिलाओं और पुरुषों दोनों का प्रतिनिधित्व हो और जिसमें पूरे जलाई कारीगर समुदाय को अंगीकार करने की संभावना हो। इस तरह भट्ठा कारीगर समुदाय के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिये एक संगठन के विचार ने आकार लिया। इसका नाम पड़ा 'भट्ठा परिवार विकास संगठन' (BPVS)।

TSI दृष्टिकोण के अन्तर्गत BPVS एक ऐसा मंच बन गया जहाँ तकनीकी और सामाजिक, औपचारिक और अनौपचारिक, सभी किस्म के ज्ञान और अनुभव आपस में बाँटे जा सकते थे और जिसमें समुदाय की ताकत व पहल को एक नई अभिव्यक्ति का स्थान मिला। BPVS ने कारीगर समुदाय के सदस्यों को अपने समान हितों को लेकर संगठित होने के लिये एक झटका दिया।

चूँकि भट्ठा कारीगर कई महीने अपने गाँव से दूर रहते हैं, इसलिये BPVS में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी गई। महिलाओं की भूमिका मजबूत करने के लिये कई विशेष कार्यशालायें की गईं। महिला शक्तिस्वरूप कार्यशाला में महिला सशक्तिकरण की बात की गई। महिला शक्ति सम्मेलन ने पूरे समुदाय के सामने महिला सशक्तिकरण के विचार पहुँचाये। महिला कानून प्रशिक्षण ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागृत होने का संदेश दिया और पुरुषों के साथ बराबरी में और सहयोग में कार्य करने का विचार बनाया। (चित्र 10)

चित्र 10: पूर्वी उत्तर प्रदेश में जेंडर कार्यशाला

ईट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

पेपुस और लोकमित्र दोनों ने BPVS को बनाना और बढ़ाना शुरु किया। पेपुस का कार्यक्षेत्र इलाहाबाद और प्रतापगढ़ का दक्षिणी हिस्सा रहा। लोकमित्र ने रायबरेली और प्रतापगढ़ में काम किया (चित्र–11)। कार्य के मार्गदर्शक सिद्धान्त निम्नलिखित थे–

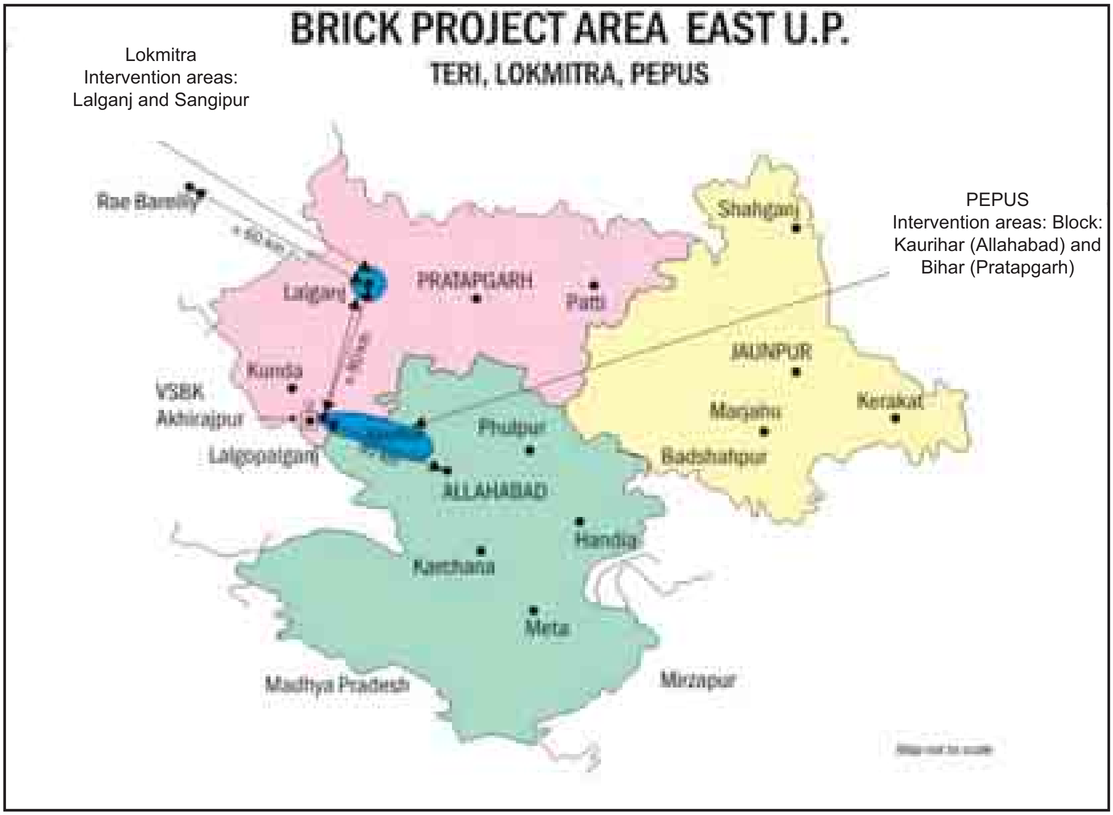

चित्र 11: ईंट परियोजना के कार्यक्षेत्र

- BPVS द्वारा कारीगर समुदाय की समस्याओं की पहचान करना और उन्हें सुलझाना। परियोजना केवल उत्प्रेरक का काम करेगी।
- समुदाय में प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित प्रश्नों पर एक ज्ञानवार्त्ता की पहल करना।
- कारीगरों का प्रवासी स्वरूप देखते हुए उनके परिवारों, विशेषकर महिलाओं को BPVS का महत्त्वपूर्ण सदस्य बनाना।
- महिला नेतृत्व को बढ़ावा देना और उसके लिये अनुकूल परिस्थितियाँ बनाना।

शुरुआती काम

सन् 2002 से पेपुस और लोकमित्र ने कारीगरों और उनके परिवारों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिये गाँव जाना शुरु किया। उन्हें कारीगरों की काम करने और रहने की परिस्थितियों की समझ बनानी थी, उनके परम्परागत ज्ञान को देखना, सीखना था और BPVS के झण्डे के नीचे इकट्ठा होने के लिये प्रोत्साहित करना था। यह एक चुनौती भरा कार्य था। गाँव वालों के साथ विश्वसनीयता का सम्बन्ध बनाने का कोई आदर्श मार्ग उपलब्ध नहीं था। हर गाँव अलग होता था। रहने वाले लोग, परिवार और जाति जैसे उनके एकता के आधार,

रोजमर्रे के तनाव और चुनौतियाँ और उनकी व्यक्तिगत व सामूहिक दक्षतायें व ज्ञान सभी कुछ अलग मिलता था।

वास्तव में केवल एक बात सभी गाँवों में समान थी : अत्यधिक आर्थिक और सामाजिक परेशानियाँ (चित्र–12)। परियोजना समूहों पर सतत यह दबाव था कि कारीगर समुदाय के व्यक्तियों अथवा समूहों के साथ काम में सहनशीलता, चतुराई व समानुभूति का परिचय दें। पेपुस के हरिराम और कमला देवी ने शुरु से ही इस बात पर जोर दिया कि काम शुरु करने के लिये समुदाय के ही किसी सदस्य को चुनना आवश्यक है।

चित्र 12: कारीगरों के परिवारों के साथ सम्बन्ध बनाना

काम शुरु करना

ठीक शुरुआत पाना एक बड़ी चुनौती था। हालांकि हम लोगों ने उत्तर प्रदेश के ही एक अन्य भाग में आदिवासी समुदायों के साथ कई वर्ष काम किया था, हमें ईंट उद्योग के बारे में कुछ नहीं मालूम था। इसलिये, हम लोगों ने ईंट भट्ठों पर जाना और मजदूरों से बात करना शुरु किया। शिरोमणि से हमारी मुलाकात हुई, वह ईंट पाथने का काम करती थी और उसका पति कारीगर था। उन्होंने बताया कि वे प्रतापगढ़ के एक गाँव के रहने वाले थे, बाद में हम उनके गाँव गये और शिरोमणि ने हमारा एक–एक करके और महिलाओं से परिचय कराया। शिरोमणि ने ही हमारे काम को शुरुआत दी। वह अब हमारे कार्यकर्त्ताओं में है। बाहरी होने के नाते, गाँव में काम के लिये, एक वहीं के व्यक्ति का साथ होना जरूरी है। वह व्यक्ति ऐसा होना चाहिये जिसमें गाँव वाले विश्वास करते हों। फिर भी परम्परा और आदतों की बाधायें पार करना कठिन होता है... लेकिन हर सम्पर्क और हर बैठक के साथ धीरे ही सही किन्तु प्रगति होती है।

–कमला देवी, पेपुस

काम शुरु करवाने वाले के महत्त्व को लोकमित्र के राजेश कुमार भी रेखांकित करते हैं। 'बाहरी होने के नाते भट्ठा कारीगर समुदाय में सामाजिक काम शुरु करना आसान नहीं था। इस समुदाय के बारे में हम जानते भी बहुत कम थे। सौभाग्य से हम लाल बहादुर नाम के एक कारीगर से मिले जो लोकमित्र के शिक्षा कार्यक्रम में शामिल हुआ था। उसने अपने गाँव के और परिवारों से हमारा परिचय करवाया और कदम–दर–कदम हम और गाँवों में भी जा सके।'

लोकमित्र में आने से पहले लालबहादुर 12 साल भट्ठा कारीगर के रूप में काम कर चुका था। उसके अनुसार 'वे कठिन वर्ष थे। मैं अक्सर सोचता था कि जीविकोपार्जन के लिये इसका कोई विकल्प मिलना चाहिए... लेकिन हम कुछ और नहीं कर सकते थे। फिर एक ईंट के सीजन के बीच एक ऐसा दिन आया जब मुझे पारिवारिक संकट की वजह से कुछ दिन के लिये भट्ठा छोड़कर घर आना पड़ा। भट्ठा मालिक की अनुमति से मैं अपने काम का जिम्मा एक दूसरे कारीगर को सौंप आया। लेकिन जब मैं भट्ठे पर वापस गया तो भट्ठा मालिक ने केवल मुझे वापस लेने से ही इन्कार नहीं किया, बल्कि मेरा 15,000/– रुपये से भी अधिक का बकाया वापस देने से भी इन्कार कर दिया। उस दिन मैंने संकल्प किया कि मैं फिर कभी भट्ठे पर काम नहीं

करूँगा। सौभाग्य से, उसके बाद जल्दी ही लोकमित्र वाले हमारे गाँव आये और मैंने उनके साथ काम का मौका नहीं गँवाया। यह केवल पैसे कमाने के लिये नहीं था, बल्कि इसके मार्फत गरीबी और दम तोड़ने वाली मेहनत से निजात पाने के लिये अपने लोगों को मजबूत करने में मदद भी करना था।'

BPVS: शक्ति के बीज

भट्ठा कारीगरों के साथ परियोजना समूह का कार्य उन महीनों तक सीमित होता था जब वे घर वापस आते थे। किन्तु उनके परिवार के साथ का कार्य वर्ष भर चलता था। शुरु में गाँव वालों की रहने की परिस्थितियाँ और उनकी रोजमर्रे की समस्याओं को समझना ही प्रमुख कार्य होता था। परियोजना समूह ने खुद उन समस्याओं के हल तैयार करने की कोशिश नहीं की, बल्कि उन्होंने वे रास्ते खोजने के प्रयास किये जिनपर चलकर वे अपने बाहरी ज्ञान को कारीगरों और उनके परिवारों के परम्परागत ज्ञान और एकता के साथ जोड़कर उनकी शक्ति और पहल में ऐसी वृद्धि कर पाते, जिससे समुदाय के लोग खुद अपनी समस्याओं के हल खोज लेते।

एक–एक व्यक्ति से बातचीत और बैठकों के जरिये एक ऐसा अभियान चलाया गया, जिससे गाँव वालों– विशेषकर महिलाओं– की यह समझ बने कि समान उद्देश्य और एकताबद्ध कार्य से उनकी शक्ति में कैसे वृद्धि हो सकती है। उन्हें ग्राम स्तरीय BPVS इकाइयाँ बनाने के लिये प्रोत्साहित किया गया। इन इकाइयों में सामने खड़ी चुनौतियों और उनसे मुकाबले के लिये अपने संसाधन एकजुट करने पर वार्त्तायें होनी थीं। परियोजना समूह ने BPVS बनाने और उसे गति देने में केवल अपनी जानकारियों द्वारा सहयोग किया। ये जानकारियाँ ग्रामीण विकास के लिये उपलब्ध सरकारी योजनाओं, न्यूनतम मजदूरी से सम्बन्धित कानूनों, कार्यस्थल पर सुरक्षा, दुर्घटनाओं के मुआवजे, स्वास्थ्य और स्वच्छता से सम्बन्धित बातों तथा बालिकाओं की शिक्षा के लिये दिये जा रहे सरकारी प्रोत्साहन आदि के बारे में होती थीं।

कारीगरों और उनके परिवारों के सामने की चुनौतियों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता था–

1. ग्राम स्तरीय मुद्दे : इसके अंतर्गत पीने के पानी के कुएँ, स्वास्थ्य सुविधायें, सफाई, रास्ते, स्कूल इत्यादि का न होना आता था। कारीगरों की अनुपस्थिति में इन सब मुद्दों पर काम की जिम्मेदारी महिलाओं के हिस्से आती थी।
2. भट्ठे से सम्बन्धित मुद्दे : इनका सम्बन्ध मुख्य रूप से कारीगरों के साथ था तथा इनमें प्रमुख रूप से मजदूरों के शोषण के विभिन्न रूप आते थे : जैसे कम मजदूरी देना, मजदूरी देर से देना और काम करने की खराब परिस्थितियाँ।

ग्राम–स्तरीय मुद्दे

शुरु में महिलाओं पर BPVS के अभियान का असर बहुत धीमा था; वे पढ़ी–लिखी नहीं थीं और गाँव और घर दोनों ही जगह एक निष्क्रिय भूमिका की उन्हें आदत थी। लेकिन परियोजना समूहों ने महिलाओं को प्रेरणा देने और गोलबन्द करने के काम जारी रखे। हर नई BPVS समिति और समितियाँ बनाने के लिये प्रोत्साहन देती थी। महिलाओं ने धीरे–धीरे सीखा और सहकारी कार्यों, जैसे आपस में कर्ज देना, के लाभ का उन्हें अनुभव हुआ। उनमें निर्णय लेने और समान हित में मिल–जुलकर काम करने का आत्मविश्वास बढ़ा। धीरे–धीरे किन्तु पक्के तौर पर उन्होंने BPVS की गतिविधियाँ नियंत्रित करना शुरु कर दिया – बातचीत के मुद्दे तैयार करना, गतिविधियों का संगठन और उनपर निगरानी रखना, वित्तीय प्रबन्धन, इत्यादि।

अपने गाँवों में रहने की परिस्थितियों में सुधार की दृष्टि से महिलायें स्थानीय सरकारी अफसरों और विभागों से प्रभावी ढंग से बात करने लगीं। BPVS ने दखल लेकर विधवाओं को उनके स्वर्गीय पतियों के मालिकों से पेन्शन और मुआवजा दिलवाया; ग्रामीण बालिकाओं को स्कूल और महाविद्यालयों में वजीफा दिलवाया; गाँव वालों को सरकारी परियोजनाओं जैसे रास्ते बनाना, तालाब खोदना इत्यादि में काम दिलवाया; और ऐसे स्थानों

पर जहाँ पानी के नल, कुएँ और रास्ते जैसे बुनियादी ढाँचागत कार्य में विलम्ब हो रहा था, उन्हें पूरा करने के लिये सरकार पर दबाव बनाया। इन कार्यों के नतीजे धीरे–धीरे आये; अक्सर ये नतीजे छोटे दिखते थे; फिर भी गाँव वालों के जीवन की गुणवत्ता के सुधार में दिखाई दें, इतना अन्तर जरूर आया। यह ध्यान देने लायक बात है कि कारीगर अब यह मानने लगे हैं कि उनके घरों की महिलाओं ने परिवार और गाँव दोनों ही स्थानों पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अखैराजपुर की मनोरमा देवी कहती हैं कि 'पुराने दिनों में महिलायें घर से बाहर ही निकलने में डरती थीं; सरकारी अफसरों से जाकर बात करना तो दूर। किन्तु अब जब हम BPVS में एकजुट हुए हैं, जब हमने संगठन की ताकत का अनुभव किया है, हम लोग किसी से नहीं डरते।' श्री सेवासरन जो गाँव के एक बुजुर्ग हैं और भट्ठा मिस्त्री रह चुके हैं, थोड़ा मुस्कुराकर कहते हैं 'मुझे याद है कैसे 10 साल पहले, जब सरकारी अफसर गाँव की ओर आते थे, तब महिलायें खेत से भागकर अपनी झोपड़ियों में चली जाती थीं। अब हमारे यहाँ की महिलाओं से मिलते वक्त अफसरों को नर्वस महसूस होता है।'

पहला सम्पर्क

लोकमित्र में मैं अपने काम के पहले दिन सच में घबड़ा रही थी। मैं पहले कभी गाँव नहीं गई थी और समाज कार्य मेरे लिये नई चीज थी! मैं रायबरेली में रहती थी और बस में 60 किलोमीटर चलकर लालगंज जाती थी, जहाँ लोकमित्र का क्षेत्रीय कार्यालय था। वहाँ मुझे लाल बहादुर मिले और हम कुछ किलोमीटर दूर भट्ठा कारीगरों के एक गाँव पैदल ही गये। इस गाँव में वे संगठन बनाने के लिये गाँव वालों को प्रेरित करने पहले कई बार जा चुके थे। गाँव में पुरुष नहीं थे। क्योंकि ईंट बनाने का सीजन चल रहा था। हम गाँव के मन्दिर के बाहर जमा महिलाओं के एक समूह से मिले। महिलायें एक ऐसे बच्चे के कल्याण की प्रार्थना कर रही थीं, जिसे कुत्ते ने काट लिया था।

प्रार्थना के बाद लाल बहादुर ने खड़े होकर एकता, संगठन, समान उद्देश्य और ज्ञान बाँटने से आने वाली ताकत के बारे में उन्हें बताया। लाल बहादुर की बात खत्म होने पर कई महिलाओं ने कहा कि वे संगठन बनाना चाहती हैं। फिर मैं अपने पास बैठी कुछ महिलाओं से बात करने लगी। बहुत जल्दी हम एक–दूसरे के प्रति आश्वस्त होकर बात कर रहे थे, इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। उन्हें मेरी वहाँ उपस्थिति पर ही अचरज था। उन्होंने मुझसे पूछा, 'तुम इतनी कम उम्र में महिला होते हुए भी अपने घर से इतनी दूर अकेली कैसे आई हो? तुम इतनी बहादुर हो, और इतनी भाग्यवान! हमारे आदमी तो हमें गाँव से बाहर कदम भी नहीं रखने देंगे!'

मुझे उनकी जरूरतों, उनकी गरीबी, का बड़ी गहराई से अनुभव हुआ। ऐसे अवसरों का एकदम न होना, जिनमें वे अपनी क्षमतायें, रचनात्मक ऊर्जायें, यहाँ तक कि अपनी व्यक्तिगत पहचान व्यक्त कर सकें, इस बात का नजदीक से सामना हुआ। BPVS के अन्तर्गत अब उनकी ताकत खुलकर सामने आ रही है।

–कलावती, लोकमित्र

भट्ठे से सम्बन्धित मुद्दे

BPVS एक ऐसा मंच भी था, जहाँ वे भट्ठे पर की अपनी दिक्कतों और असुरक्षा के बारे में खुलकर बात कर सकते थे। चिन्ता के तीन प्रमुख विषय थे–

1. भट्ठा कारीगरों के पास कोई पहचान–पत्र नहीं थे, जिन्हें लेकर वे दूर–दूर के भट्ठों पर जाते। इसलिये रास्ते में पुलिस और रेलवे वाले उन्हें परेशान करते थे। पहचान–पत्र न होने से रास्ते में दुर्घटना की हालत में उनके घर कहाँ हैं और किसे खबर करना है, यह पता लगाना अधिकारियों के लिये कठिन हो जाता था।

2. अक्सर कारीगरों को एक से ज्यादा भट्ठों पर काम करना होता था। टेलीफोन या तुरत संचार के अन्य माध्यमों की अनुपस्थिति में परिवार वाले किसी भी अचानक जरूरत के वक्त भी उनसे सम्पर्क नहीं कर पाते थे।
3. भट्ठा मालिकों के साथ कारीगरों के कोई लिखित समझौते नहीं होते थे। इस स्थिति में मालिकों द्वारा शोषण के सामने वे असहाय होते थे।

सम्बन्ध बनाना : धीरज का कार्य

मैंने सितम्बर, 2001 में पेपुस में काम करना शुरु किया। मेरे पिता भट्ठा कारीगर थे। मेरे चाचा आज भी भट्ठा कारीगर हैं। किन्तु जब तक मैंने पेपुस के साथ काम शुरु नहीं किया था, मुझे भट्ठा कारीगरों द्वारा अपने काम में प्रयोग किये जा रहे परम्परागत ज्ञान के मूल्य अथवा उसकी गहराई की कोई समझ नहीं थी। अब मैं यह जानता हूँ कि ईंटें पकाना एक बड़ा ही खास कौशल है, जो कारीगरों की हर पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी को सिखाती है।

भट्ठे पर काम करने वाले अन्य समुदायों की तरह ही कारीगर भी गरीब और अशिक्षित होते हैं। हमने जब कारीगर समुदाय के साथ सम्बन्ध बनाना शुरु किया तब उनकी और समस्याओं को भी शब्द मिलने लगे : मजदूरी न देना, भट्ठे पर असुरक्षित काम की परिस्थितियाँ और निवास की खराब स्थिति, बार–बार होनेवाली दुर्घटनायें, लगभग आधे साल कोई काम न होना। जब हमने कारीगरों से यह बात शुरु की कि किस तरह वे अपनी समस्याओं पर काबू पा सकते हैं, उनमें से कुछ ने पूछा कि यह सब करके हमें क्या मिलने वाला है। हम क्यों उनके कष्ट में रुचि ले रहे हैं। उनका विश्वास जीतने में बहुत समय और सब्र की जरूरत पड़ी है।

–राजकुमार, पेपुस

शक्ति का कुआँ

हमारे गाँव अखैराजपुर में 150 घर हैं और लगभग 900 की आबादी। सालों से हम सरकार से एक हैण्डपम्प युक्त कुएँ की माँग कर रहे थे। कोई नतीजा नहीं निकला। हम बार–बार खण्ड विकास कार्यालय जाते, कनिष्ठ अधिकारियों से बात करते और खण्ड विकास अधिकारी से भी बात करते; हमने SDM (सब–डिवीजनल मजिस्ट्रेट) से भी बात की, लेकिन केवल आश्वासन मिले, कुछ हुआ नहीं। अन्त में एक दिन BPVS की हम 60 महिलायें एक ट्रैक्टर–ट्राली पर सवार होकर सीधे कलक्टर के दफतर जा पहुँचीं। हमें देखते ही गेट पर खड़े पुलिस के जवान सतर्क हो गये।

वे चिल्लाये 'यह सब क्या है? क्या कोई प्रदर्शन है?'

हमने जवाब दिया, 'हम भट्ठा परिवार विकास संगठन के प्रतिनिधि हैं!

पानी की माँग लेकर आये हैं!'

हमने पुलिस को अपने BPVS सदस्यता कार्ड दिखाये और उनके हल्के–फुल्के विरोध को दरकिनार कर सीधे डी. एम. के कमरे में घुस गये। वे अचरज में खड़े हो गये और हमसे पूछा कि हम क्या चाहते हैं? हमने अपनी बात बताई और इस बात पर जोर दिया कि किस तरह वर्षों से अन्य अधिकारी हमारी पानी की माँग पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। उन्होंने धीरज से हमारी बात सुनी और हमें आश्वासन दिया कि वे खुद देखेंगे कि हमारी समस्या का हल होता है। उन्होंने अपना वादा निभाया।

एक हफ्ते में अखैराजपुर का अपना कुआँ, हैण्डपम्प था (चित्र–13)।

–शोभा, BPVS सदस्य, अखैराजपुर

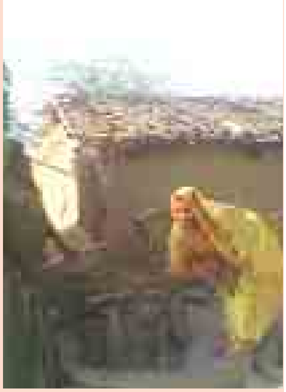

चित्र 13: सामुदायिक प्रयास से स्थापित पानी का हैण्डपम्प

परिवर्तन का मार्ग

हमारा गाँव थरिया पंचायत के और गाँवों से दल–दल के चलते कटा रहता था। कई साल से गाँव वाले दल–दल के बीच से एक रास्ते की माँग कर रहे थे लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। इस बीच हमें पता चला कि सरकार ने एक रास्ता बनाने के लिये पैसे आबंटित कर दिये हैं, किन्तु वह पैसा बी.डी.ओ. के दफ्तर में पड़ा हुआ है। इसलिये हम जाकर बी.डी.ओ. से मिले और रास्ता बनवाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि काम जल्दी ही हो जायेगा... पर कुछ हुआ नहीं।

एक सप्ताह इंतजार करने के बाद हमने कुछ करने की ठानी। एक रात हम सब महिलायें दल–दल पर गईं, अपने हाथों से हमने कीचड़ और मिट्टी खोदकर निकाली, और पत्थर के टुकड़ों का इंतजाम किया और सुबह तक हमने दल–दल पार करने का एक कच्चा रास्ता बना लिया था। बी.डी.ओ. बेहद गुस्सा हुआ और उसने कुछ लोगों को भेजकर वह रास्ता तुड़वा दिया। अगली रात हमने उसे फिर से बना लिया और वह फिर तोड़ दिया गया। तीन बार हमने रास्ता बनाया और तीनों बार उसे तोड़ दिया गया। अन्त में बी.डी.ओ. ने हमें धमकी दी कि यदि हमने अपनी गतिविधियाँ न बन्द कीं तो हमें खराब नतीजे भुगतने होंगे।

उसी शाम BPVS की बैठक में चर्चा हुई, जिसमें पंचायत के हर गाँव के सदस्य उपस्थित थे। अगले दिन 3 ट्रैक्टर ट्राली में भरकर, BPVS का बैनर लेकर, नारे लगाते हुए हम लालगंज गये। वहाँ हम SDM के दफ्तर के सामने जाकर रुके। लालगंज में काफी हलचल हो गई, स्थानीय पत्रकार भी आ गये। SDM जल्दी–जल्दी अपने दफ्तर के बाहर आये, हमारी बात सुनी और बहुत जल्दी दल–दल पर रास्ता बनाने का आश्वासन दिया। तीन दिन में रास्ता बन गया।

–विमला, BPVS सदस्य,ग्राम थरिया

पहचान–पत्र

परियोजना ने BPVS को एक सरल किन्तु उपयोगी पहचान–पत्र बनाने में मदद की। अब कारीगर काम पर जाते वक्त यह पहचान–पत्र अपने पास रखते हैं। हर पहचान–पत्र पर स्थानीय BPVS केन्द्र की मुहर लगी होती है (चित्र–14)। साथ ही हर BPVS केन्द्र पर एक रजिस्टर रखा हुआ है, जिसमें काम पर जाने वाले हर कारीगर का नाम, पता, नजदीकी रिश्तेदार का नाम/पता, उसके भट्ठे के मालिक का नाम/पता और भट्ठा कहाँ है, यह सब लिखा जाता है। ये सीधी–सादी बातें हैं, किन्तु इनका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ता है। इससे कारीगर की तथा उसकी पत्नी व परिवार के अन्य सदस्यों की सुरक्षा बढ़ती है।

चित्र 14: कारीगर का पहचान–पत्र

इकरारनामा

जगह–जगह पर होने वाली BPVS की बैठकों में काफी समय इस विषय पर बात करने के लिये दिया जाता था कि भट्ठा मालिक और कारीगर के बीच न्यायसंगत शोषणमुक्त सम्बन्ध कैसे बनाये जा सकते

इकरारनामा

चित्र 15: इकरारनामा

हैं। इस बात पर सभी सहमत थे कि कारीगर, मिस्त्री और भट्ठा मालिक का एक–दूसरे में विश्वास न होने से सभी का नुकसान होता है। इन चर्चाओं में इकरारनामा के विचार का उदय हुआ। इकरारनामा एक ऐसा लिखित औपचारिक समझौता होना था, जिसमें कारीगरों द्वारा भट्ठे पर काम की शर्तें व परिस्थितियाँ दर्ज हों। शुरु में कारीगरों ने एक 29 बिन्दु का इकरारनामा बनाया। कुछ वर्षों में यह एक 15 बिन्दु के पासबुक के रूप में आ गया है जिसमें काम शुरु करने की तारीख का एक खाना होता है और काम की परिस्थितियों की शर्त्तों का वर्णन। इसमें वे सारे बिन्दु हैं जो कारीगरों के लिये महत्त्व रखते हैं, जैसे–पेशगी की मात्रा, माहवारी पारिश्रमिक, भट्ठे पर रहने की व्यवस्थायें, खाना पकाने के लिये मिट्टी का तेल, इत्यादि।

इकरारनामा एक पर्चे के रूप में छापा गया (चित्र–15) और उसे सभी BTK मालिकों तथा ईंट निर्माता परिषद, उत्तर प्रदेश को भेजा गया। आदर्श रूप में इस इकरारनामे पर कारीगर, मिस्त्री और भट्ठा मालिक, तीनों के ही दस्तखत होने चाहिए। किन्तु परियोजना समूह द्वारा BTK के मालिकों को इकरारनामे पर राजी करने के प्रयासों के नतीजे नहीं के बराबर निकले। फिर भी यह उत्साहजनक है कि पिछले कुछ वर्षों से कारीगरों और मिस्त्रियों के बीच इकरारनामों पर दस्तखत हुए हैं। इकरारनामे की कानूनी स्थिति क्या है, यह साफ नहीं है, किन्तु यह जरूर है कि इसके चलते कारीगर और उसके परिवार के सदस्यों को कुछ राहत और सुरक्षा महसूस होती है। कुल मिलाकर इकरारनामे की प्रक्रिया ने संगठन को मजबूत किया है। इसने चेतना का स्तर ऊँचा किया है, गरीब व असंगठित क्षेत्र के कार्यकर्त्ता कारीगर के रूप में अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए हैं, इस संभावना के प्रति जागरूक हुए हैं कि उनके काम की परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। BPVS के सभी कार्यों में इकरारनामे की अपील ही कारीगरों के बीच सबसे ज्यादा रही है। उत्तर प्रदेश ईंट निर्माता परिषद ने भी श्रम आयुक्त, उत्तर प्रदेश के साथ उनके भट्ठों पर श्रम कानून ठीक से लागू होने के बाबत वार्त्ता शुरु की।

सुरक्षा के प्रश्न

पेपुस की कमला देवी का कहना है कि ग्राम स्तरीय BPVS केन्द्रों पर कारीगरों का एक रजिस्टर रखने की व्यवस्था ने सुरक्षा की भावना पैदा की है। पहले इन महिलाओं को न केवल अपने बल पर परिवार का प्रबन्ध करना पड़ता था और जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करना पड़ता था, बल्कि वे यह तक नहीं जानती थीं कि उनके पति कहाँ होते थे, किसके भट्ठे पर काम करते होते थे, वह भट्ठा कितना दूर व कहाँ था। वे यह तक नहीं जानती थीं कि उनके आदमी सुरक्षित तौर पर भट्ठे पर पहुँच गये हैं या नहीं और यह कि वे वापस आयेंगे। उन्हें कुछ भी मालूम नहीं होता था। अब वे कम-से-कम यह जानती हैं कि आपात् स्थिति में उनके आदमी कहाँ मिलेंगे?

एक ऐसा भी उदाहरण है जिसमें गाँव के रजिस्टर के चलते अक्षरशः कारीगरों की जान बचाई जा सकी। 2007 में लखरॉव ग्राम पंचायत से छः कारीगर बिहार में एक BTK पर काम करने गये। यह भट्ठा ऐसे दो लोग चलाते थे जिनका व्यवहार मजदूरों के साथ बहुत खराब था। कई सप्ताह तक उन्होंने कारीगरों को मजदूरी नहीं दी। जिन दो कारीगरों ने सवाल उठाया, उन्हें बहुत मार पड़ी और गैर-कानूनी ढंग से नज़रबन्द रख लिया गया। कुछ दिनों में ये दोनों भाग निकले। वे भागकर घर आये और गाँव वालों को यह बताया कि बाकी चार किन हालातों में बिना मजदूरी के काम करने को मजबूर हैं। गाँव वालों ने तुरन्त BPVS कार्यालय पर रखा रजिस्टर खोला और भट्ठे का पता निकाला। एक व्यक्ति ने पास के बाजार से भट्ठा मालिकों को फोन किया और कहा कि अगर कारीगरों को उनकी मजदूरी देकर तुरन्त नहीं छोड़ा गया तो सैकड़ों BPVS सदस्य पुलिस को साथ लेकर भट्ठे पर आ धमकेंगे। भट्ठा मालिकों ने तुरन्त, जैसा कहा गया था, वैसा किया।

जड़ें मजबूत करना : ज्ञान आधारित गतिविधियाँ

संगठन का नाम उस क्षेत्र में होने लगा। पहचान-पत्र, इकरारनामा, TERI टीम द्वारा कारीगरों की तकनीकी क्षमता में वृद्धि और स्थानीय प्रशासन पर दबाव लाने की संगठन की क्षमता, चर्चा का विषय बने। BPVS का संगठन नये गाँवों में पहुँचने लगा। परियोजना समूह ने कई गाँवों के संगठनों द्वारा साथ आकर व्यापक समूहों के निर्माण के लिये कार्यशालायें आयोजित कीं। ये व्यापक स्तर के समूह कारीगरों के परिवारों के कल्याण मंच के रूप में विकसित होने लगे। पेपुस ने 'भट्ठा परिवार विकास सेवा संगठन' बनाया। लोकमित्र ने 'भट्ठा कारीगर तकनीकी समाज संघ' बनाया।

2004 में TERI ने तय किया कि अब लोकमित्र और पेपुस को साथ लाकर तृणमूल स्तर की गोलबन्दी में और जोर भरना चाहिये। 2 अक्टूबर, 2004, गांधी जयन्ती, के दिन परियोजना के समर्थन पर दोनों समूह साथ आये और लालगंज के धुइसरनाथ गाँव में स्थापना दिवस सम्मेलन किया। धुइसरनाथ भट्ठा परिवार संगठन नाम से हुए इस सम्मेलन में पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों के गाँवों के BPVS सदस्यों को पहली बार इतने बड़े पैमाने पर अपना ज्ञान और अनुभव आपस में बाँटने तथा ग्रामस्तरीय व भट्ठे से सम्बन्धित समस्याओं पर आपस में वार्त्ता करने और उन्हें सुलझाने का मौका मिला। एक तरह से धुइसरनाथ स्थापना दिवस ने संगठन को तब्दील कर दिया; एक ग्रामस्तरीय समूहों का संगठन, एक ऐसे 'ज्ञान-संगठन' में तब्दील हो गया जो भट्ठा कारीगरों के सामूहिक ज्ञान और ताकत का प्रतिनिधि हो। धुइसरनाथ में एक छोटा-सा कार्यालय बनाया गया और 7 महिलाओं को सम्मिलित करते हुए 13 सदस्यीय नेतृत्व को निर्वाचित किया गया, जिसे संगठन को निम्नलिखित चार बिन्दुओं पर आगे बढ़ाना था-

ईट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

1. भट्ठा कारीगरों द्वारा अपने परिवार के साथ मालिकाने में उन्हीं के गाँवों में छोटे भट्ठे को बढ़ावा देना।
2. सरकार से पानी, स्वास्थ्य सुविधायें तथा आजीविका के अवसरों जैसी मौलिक सेवायें प्राप्त करना।
3. अपने अधिकारों और संसाधनों के प्रति जानकारी बढ़ाना व ज्ञान बाँटना, विशेषकर महिलाओं के सन्दर्भ में।
4. भट्ठे पर कारीगरों के हितों और अधिकारों की सुरक्षा की दृष्टि से एक औपचारिक समझौता दस्तावेज के रूप में इकरारनामा तैयार करने का कार्य जारी रखना।

तभी से TERI और स्थानीय संस्थाओं ने संगठन अभियान तेज कर दिया। नये लोगों को संगठन में लाना, धुइसरनाथ स्थापना दिवस जैसे सम्मेलन आयोजित करके आपस में ज्ञान बाँटना, अनौपचारिक वार्त्ताओं, कार्यशालाओं और औपचारिक प्रशिक्षण के माध्यम से सदस्यों की तकनीकी और सामाजिक क्षमताओं का विकास करना, प्रमुख कार्य रहे (चित्र–16)। परियोजना, मेलों और प्रदर्शनियों जैसे स्थानीय सांस्कृतिक अवसरों और वार्त्ता शिविरों के मार्फत समुदाय के साथ काम करती है। एकता का संदेश देने के लिये और सामूहिक दखल के फायदे के बारे में बताने के लिये स्थानीय सांस्कृतिक तौर–तरीकों का इस्तेमाल करके BPVS की गतिविधियों का वर्णन करने वाले पर्चे और पोस्टर प्रसारित किये जाते हैं (चित्र–17)।

चित्र 16: भट्ठा कारीगर समुदाय से वार्त्ता

ज्ञान की क्रियाओं को आगे बढ़ाने के लिये भट्ठा कारीगरों के गाँवों में और पास के बाजारों में पेपुस और लोकमित्र ने ज्ञान चौपाल, ज्ञान केन्द्र व चिन्तन ढाबा केन्द्र बनाये हैं (चित्र–18)। ये अधिकतर चाय की दुकानों जैसे स्थानों पर अनौपचारिक तौर पर एकत्र होने और वार्त्ता करने के स्थान हैं। इन जगहों पर गाँव से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं, भट्ठे से सम्बन्धित तकनीकी समस्याओं, संगठन के मुद्दों और आजीविका के अवसरों, जैसे विषयों पर बातचीत होती है। लोगों का अपने ज्ञान में आत्मविश्वास बढ़े इसके लिये लोकमित्र ने 'ज्ञान, प्रोत्साहन एवं सूचना केन्द्र' शुरु किया है। महिलाओं और बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने

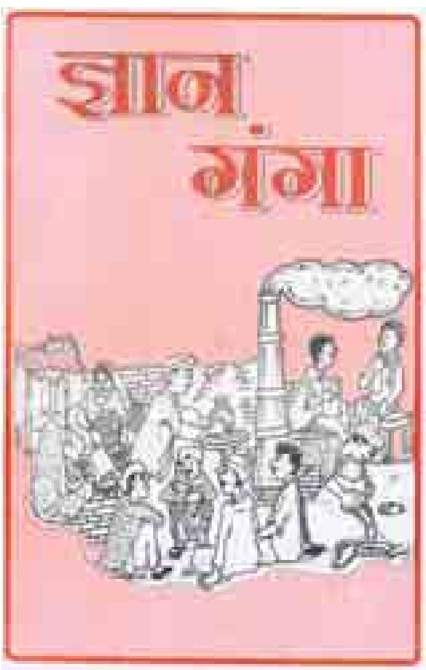

चित्र 17: कारीगर समुदाय के लिये ज्ञान प्रकाशन

चित्र 18: ज्ञान चौपाल

और कुछ पेशेवर कौशल सिखाने के काम को दोनों ही संस्थायें बढ़ावा देती हैं।

मई, 2007 में पेपुस ने लाल गोपालगंज (इलाहाबाद) में 'ज्ञान की धुरी' नाम से एक स्थान बनाया, जहाँ कारीगर व भट्ठे से जुड़े और लोग अपने ज्ञान व अनुभव का लेन–देन एक–दूसरे के साथ कर सकते थे। ज्ञान की धुरी एक ऐसा स्थान बनना था जहाँ कारीगर का परम्परागत ज्ञान और इंजीनियर का विश्वविद्यालय का ज्ञान सकारात्मक सहयोग का रास्ता बनाते। इस परियोजना के सामाजिक सलाहकार श्री सहस्रबुद्धे इस धुरी को ज्ञान के एक केन्द्र के रूप में विकसित होता देखते हैं। उनका कहना है कि यह धुरी एक अमूर्त्त ज्ञान बाँटने की व्यवस्था का एक भौतिक घटक है।

'ज्ञान बाँटने का विचार' ज्ञान को एक स्थान पर या कुछ लोगों के बीच केन्द्रित करने का विचार नहीं है, बल्कि यह ज्ञानी व्यक्तियों का एक ताना–बाना बुनने का विचार है; एक ऐसा ताना–बाना, जिसमें एक–दूसरे के फायदे में सभी विचर सकते हैं। ज्ञान की धुरी जैसे भौतिक ज्ञान भण्डार के साथ सहअस्तित्व में ऐसा ताना–बाना काम करता है।'

TERI और उसकी सहभागी संस्थाओं की मेहनत रंग लाई है। संगठन अब 350 गाँवों में फैल चुका है। इलाहाबाद, रायबरेली और प्रतापगढ़ जिलों के लगभग 20,000 भट्ठा कारीगरों व मिस्त्रियों तथा उनके परिवारों तक संगठन की पहुँच है।

क्षमता विकास

ईंट उद्योग जैसे परम्परागत क्षेत्र में तकनीकी और सामाजिक बदलाव लाने के लिये हर स्तर पर क्षमता विकास की जरूरत होती है – नीतियाँ बनाने वालों, नियमन प्राधिकरणों, प्रौद्योगिकी आपूर्तिकर्त्ताओं, एन.जी.ओ., भट्ठा मालिकों और कामगार समुदायों, सभी में एक नई सोच पैदा करनी पड़ती है। SDC के समर्थन से 2005 में TERI ने लघु और कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में एक नई पहल ली व इसे कोस्माइल (CoSMiLE: Competence Network for Small & Micro-Learning Enterprise) नाम दिया। कोस्माइल परियोजना के अन्तर्गत TERI ने भट्ठा कारीगर समुदाय व भट्ठे से जुड़े अन्य व्यवसायियों के बीच ज्ञान बाँटने और सीखने की दृष्टि से तकनीकी और सामाजिक क्षमता विकास कार्यक्रम चलाये।

TERI ने BTK भट्ठे में BOP विकसित करने के लिये समय–समय पर और कई स्थानों पर कारीगरों के लिये प्रशिक्षण कार्यशालायें कीं। BOP के लिए व्यवस्थाओं और तौर–तरीकों में बदलाव चाहिये होता है। कारीगरों के सुझाव पर मालिक ये बदलाव करने को तैयार नहीं होते, खासकर तब जब इन बदलावों में पैसा

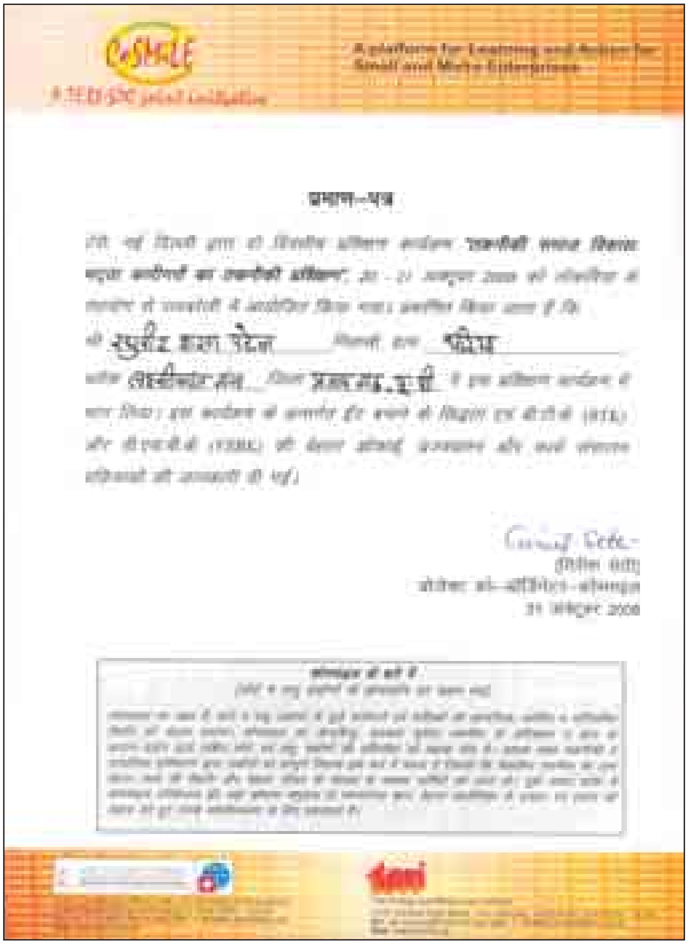

प्रमाण–पत्र

चित्र 19: BOP(Best operating practices) प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रमाण–पत्र

खर्च करना हो। इसलिए TERI ने BTK मालिकों के लिये भी BOP प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये। BOP प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले कारीगरों को परियोजना से प्रमाण–पत्र दिये जाते हैं (चित्र–19)।

इन प्रमाण–पत्रों के चलते BTK मालिकों की नज़र में कारीगरों का सम्मान बढ़ जाता है। ये प्रमाण–पत्र बढ़ी हुई क्षमता का सबूत होते हैं और इसलिये BOP स्वीकार किये जाने की क्रिया को सुगम बनाते हैं।

नीचे TERI द्वारा संचालित तकनीकी और सामाजिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कुछ उदाहरण संक्षेप में दिये जा रहे हैं।

जेन्डर की समझ और प्रशिक्षण कार्यशालायें

भट्ठा कारीगर समुदाय में घरेलू वित्त प्रबन्धन या निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी की कोई परम्परा नहीं है। शिक्षा प्राप्त करने, अपने रचनात्मक कौशल को आगे बढ़ाने या रोजगार खोजने के अवसर उनके पास नहीं हैं। दूसरी ओर जब कारीगर भट्ठों पर चले जाते हैं, तब महीनों अपने परिवार और गाँव की व्यवस्था सम्हालने की जिम्मेदारी उन्हीं पर होती है। जाहिर है कि इस समुदाय के पुरुषों और महिलाओं, दोनों के ही सोचने के तरीके में परिवर्तन की जरूरत है। इस समझ की जरूरत है कि महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त हों। वे विशेष किस्म की शक्ति और दक्षतायें रखती हैं। पुरुष और महिलायें दोनों सहजीवन के बोध के साथ सहभागियों की तरह काम करते हैं, तो पूरे समुदाय की प्रगति होगी। इस नारे में ये बातें समाहित हैं–

हम बढ़ेंगे तभी, विकास की ओर।
नर–नारी बाँधेंगे जब, सहजीवन की डोर।।

सहजीवन के सिद्धान्त को आधार बनाकर लोकमित्र और पेपुस ने स्त्रियों की शक्ति के प्रति चेतना विकास की कई कार्यशालायें कीं। इन कार्यशालाओं के मुख्य विषय महिलाओं के वैधानिक अधिकार और जेन्डर बराबरी से सम्बन्धित थे। यह उम्मीद की गई कि इनसे पुरुषों और स्त्रियों की शक्तियों में तालमेल बढ़ेगा। कार्यशालाओं के उदाहरण हैं–

- जेन्डर कार्यशाला : इलाहाबाद, जून, 2002
- महिला शक्ति स्वरूप कार्यशालायें : लालगोपालगंज, नवम्बर, 2002; फरवरी, 2004

- महिला शक्ति सम्मेलन : कमालापुर, नवम्बर 2002; लालगोपालगंज, अप्रैल 2004
- महिला कानून कार्यशालायें : लालगोपालगंज, मई 2003; मार्च 2005.

भट्ठा कारीगरों के लिये तकनीकी–सामाजिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

भट्ठा कारीगर समुदाय के तकनीकी और सामाजिक विकास के लिये TERI ने अगस्त–सितम्बर 2006 में दो कार्यक्रम संगठित किये। इन कार्यक्रमों में इलाहाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली और फतेहपुर जिलों से लगभग 50 कारीगरों ने भाग लिया। अगस्त 2006 में इलाहाबाद में तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। इसमें ईंट निर्माण के तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी गई और कारीगरों का परिचय टनेल किल्न जैसी ईंट पकाई की नई प्रौद्योगिकी से कराया गया। वार्त्ताओं के दौरान कारीगरों ने अपने अनुभव बताये और पकाई के समय आने वाली तकनीकी समस्याओं को सामने रखा। कार्यक्रम के अन्त में भागीदारों को प्रमाण–पत्र दिये गये।

सामाजिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, सितम्बर, 2006 में, पूरे कलंदर में हुआ। इसमें मुख्य रूप से BPVS को मजबूत करने के तरीकों पर बात हुई। मुख्य बातें BPVS का और समूहों के साथ सम्बन्ध बनाना, विभिन्न क्षेत्रों में नये ज्ञान के प्रसार के लिये अगुआओं की पहचान करना और कारीगर, मिस्त्री व भट्ठा मालिक के बीच वार्त्ता के तरीके खोजना, से सम्बन्धित थीं।

मिंडारा के रंग

मिंडारा गाँव में बाँसों पर खड़ा एक झोपड़ा है। वहाँ एक पुरानी सिलाई मशीन है और बगल में ही एक मेज पर ऊन और कपड़े की गाँठें दिखती हैं। करीब 20 लड़कियाँ चटाई पर बैठी हुई हैं और सुइयों से धागा, ऊन और कपड़ों के टुकड़ों पर काम कर रही हैं। यह उन कई किशोरी शिक्षण–प्रशिक्षण केन्द्रों में से एक है, जिन्हें पेपुस द्वारा किशोरियों के प्रशिक्षण के लिये चलाया जाता है। इन केन्द्रों पर पढ़ना–लिखना, स्वास्थ्य और स्वच्छता की बातें और सिलने, बिनने, और खिलौने बनाने जैसे व्यावसायिक हुनर सिखाये जाते हैं। वहाँ की एक शिक्षिका, ज्योति, का कहना है 'इस केन्द्र पर 40–50 लड़कियाँ हैं, जो मिंडारा और पासपास के गाँवों से आती हैं।' पास में रखे ढोल की ओर इशारा करके वह कहती हैं 'जब भी संभव होता है, मैं उन्हें गाने गाकर और कहानियाँ सुनाकर सिखाती हूँ। इससे लड़कियाँ अच्छे ढंग से सीखती हैं और ठीक से बात करना भी सीखती हैं।' उसने यह भी बताया कि कुछ लड़कियों को थोड़ा हिन्दी व अंग्रेजी आता है, क्योंकि वे कुछ वर्ष निजी स्कूलों में गई हैं। किन्तु वहाँ की ज्यादा फीस, रुपये 40–50 प्रति माह, के चलते उन्हें वे स्कूल छोड़ने पड़े। स्कूल छोड़ने का एक कारण यह भी है कि घर और खेत का काम करने के साथ स्कूल में पूरा समय दे पाना संभव नहीं हो पाता।

आज ये लड़कियाँ छोटे–छोटे रंगीन कपड़ों पर कसीदे का काम करती हैं। रूमाल, छोटे–छोटे तौलिये, बच्चों के कपड़ों आदि पर काम करती हैं। कुछ चीजें वे अपने लिये रख लेती हैं और बाकी साप्ताहिक बाजार में बेच देती हैं। लड़कियाँ कोई भी वस्तु बेकार नहीं जाने देतीं। एक लड़की ने बताया कि ज्योति दीदी शुरु में पुराने अखबारों पर काटना सिखाती हैं, जिससे कपड़ा बरबाद नहीं होता। ज्योति ने बताया कि लड़कियाँ कच्चे माल की व्यवस्था खुद करती हैं, केवल सिलाई की मशीन व अन्य उपकरणों की व्यवस्था पेपुस करता है। 'चूँकि सामान उनका अपना होता है, वे अपने काम का मूल्य समझती हैं; इससे उनके दृष्टिकोण में बहुत फर्क पड़ता है और उनके हुनर में निखार आता है।'

चित्र 20: कारीगरों के तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम

BOP प्रशिक्षण कार्यक्रम

BOP यानि बेस्ट आपरेटिंग प्रैक्टिस, यानि काम करने के सबसे अच्छे तरीके। TERI ने भट्ठा कारीगरों के लिये BOP पर सितम्बर, 2007 में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम किये : एक पेपुस के साथ लालगोपालगंज में 5–6 सितम्बर को और दूसरा लोकमित्र के साथ सूची में 7–8 सितम्बर को (चित्र–20)। इन कार्यक्रमों में BTK भट्ठों में पकाई का अभ्यास कैसे सुधारा जाये, इस पर बात हुई। इनमें कुल मिलाकर 90 कारीगरों ने भाग लिया। TERI द्वारा बनाई गयी एक हिन्दी की वीडियो फिल्म भी इन कार्यक्रमों में दिखाई गई। उसका शीर्षक था : बचत के लिये ईंट भट्ठे में बेहतर कार्यविधि। फिल्म के बाद समूह चर्चायें की गईं, जिनमें BTK भट्ठा चलाने से सम्बन्धित विशिष्ट समस्याओं की पहचान की गई और उन पर बहस की गई। इस सत्र में कारीगरों का परम्परागत ज्ञान उभर कर सामने आया।

ईंट उद्योग क्षेत्र के भविश्य के प्रति सचेत रहने के लिये भागीदारों का नई प्रौद्योगिकियों और नई वस्तुओं से परिचय भी कराया गया। बड़े–बड़े चित्रों का इस्तेमाल करके प्रशिक्षणकर्त्ताओं ने टनेल किल्न के बारे में समझाया और मशीन से पाथी ईंटों, खपड़ा और सजावट के उत्पादों को तैयार करने की विधियों के बारे में बताया। सत्र के अन्त में भागीदारों को एक कार्यविधि पुस्तिका दी गई, जिसमें पकाई व अन्य विधियों में सुधार के बारे में बताया गया था।

ज्ञान का स्वयंस्फूर्त विस्तार

सूची के 7–8 सितम्बर, 2007 के प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रोत्साहन लेकर, सूची में 15 सितम्बर 2007 को कारीगरों ने अपने आप तकनीकी पहलुओं पर आपस में वार्त्ता आयोजित की। इस कार्यक्रम में नये कारीगरों के सवालों का जवाब ज्यादा अनुभव रखने वाले मिस्त्रियों ने दिया। उदाहरण के लिये कभी–कभी सफेद ईंटें क्यों बनती हैं, आग धीरे–धीरे आगे बढ़ने के क्या कारण होते हैं, ईंट पकाई में अच्छा ईंधन कौन–सा होता है, जैसे सवालों पर बात हुई। यह कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण रहा क्योंकि इसका विचार बनाना और कार्यान्वयन दोनों ही कारीगरों ने खुद किया।

कारीगर मालिकाने के VSBK को बढ़ावा

मार्च 2003 में TERI कारीगरों को वाराणसी का VSBK दिखाने ले गया। इस दौरे के चलते–

- कारीगरों को एक VSBK देखने को मिला, उसकी तकनीकी ताकत और कमजोरियाँ देखने को मिलीं और ईंट की पकाई व गुणवत्ता में सुधार से सम्बन्धित बातें सुनने को मिलीं, और

- यह तय करने का मौका मिला कि क्या कोई कारीगर अपने गाँव में VSBK लगाने में रुचि रखते हैं।

वाराणसी के इस 3 दिन के कार्यक्रम में पेपुस और लोकमित्र द्वारा इलाहाबाद, प्रतापगढ़ और रायबरेली से कुल मिलाकर 36 मिस्त्री और कारीगर लाये गये। समूह बनाकर कारीगरों को वाराणसी के VSBK पर अध्ययन के लिये ले जाया गया (चित्र–21)। उन्हें दो ऐसे भट्ठे भी दिखाये गये जहाँ कच्ची ईंटों को जिग–जैग व्यवस्था में सजाया जाता था। यह सब देखने के बाद इन समूहों ने सबके सामने VSBK और जिग–जैग भट्ठे पर अपने विचार, निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत किये। कारीगरों को जिग–जैग भट्ठों की तुलना में VSBK ज्यादा पसन्द आया क्योंकि इसमें काम करने का स्थान अधिक साफ था।

चित्र 21: वाराणसी VSBK पर दौरे में आये कारीगर

कई कारीगरों ने VSBK लगाने की इच्छा जाहिर की लेकिन खर्च से चिन्तित थे। TERI ने यह दृष्टिकोण अपनाया कि यदि कोई उद्यमी VSBK के लिये अपनी जमीन और पूँजीगत लागत का बड़ा हिस्सा लगाता है, तो परियोजना की ओर से मदद व कर्ज के मार्फत बाकी खर्च का इंतजाम किया जाना चाहिये। इन कसौटियों के आधार पर चाहत व्यक्त करने वाले कारीगरों में से TERI ने कुछ ऐसे उद्यमी चुने जिनमें उत्साह भी था और जिनके पास संसाधन भी थे। इन कारीगरों को ले जाकर विकास विकल्प द्वारा ग्वालियर में बनाया गया VSBK और उनका दतिया का VSBK सर्विस सेन्टर दिखाया गया। इन कारीगरों में इलाहाबाद जिले के अखैराजपुर गाँव के एक नामी मिस्त्री हरिशरन सिंह भी थे। आगे चलकर हरिशरन और उनकी पत्नी मनोरमा देवी ने VSBK लगाने का तय किया।

मनोरमा–हरिशरन VSBK

TERI की देखरेख में अखैराजपुर में हरिशरन की जमीन पर एक भट्ठी वाला एक VSBK बनाया गया। भट्ठे का 90% खर्च परियोजना द्वारा सहायता के रूप में दिया गया। चूँकि हरिशरन BTK पर काम करने चले गये थे, मनोरमा ने अपने परिवार की जिम्मेदारियों के साथ VSBK बनवाने, चलवाने और उसके प्रबन्धन की जिम्मेदारी भी उठाई : कच्चामाल व वस्तुयें मँगाना, समय से उन्हें प्राप्त करना, पथेरों के समूह संगठित करना और मजदूरों को काम पर लगाना तथा सभी कामों की देख–रेख करना। TERI की देखरेख में यह VSBK बना और पहली बार मई, 2004 में इसमें आग जलाई गई (चित्र–22)। पकी हुई ईंटों का रंग अच्छा था, लेकिन वाराणसी के VSBK की तरह ही उत्तर भारत की गुणवत्ता की कसौटी पर वह खरी नहीं उतरती थीं। दो ईंटों के टकराने पर जो आवाज आनी चाहिए, वह नहीं आती थी। आगे के वर्षों में सुधार की कोशिश की गई, किन्तु कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली।

चित्र 22: अखिराजपुर VSBK

हरिशरन का कहना है कि 'VSBK में बहुत ज्यादा तापमान पर ईंटें भट्ठी से बाहर निकलती हैं और उन्हें अचानक ठण्डा वातावरण मिलता है। इसके चलते उनमें महीन दरारें पैदा हो जाती हैं और इन दरारों के चलते वे BTK की अव्वल दर्जे की ईंटों जैसी आवाज नहीं दे पातीं। यहाँ अखैराजपुर में हमारे चारों ओर BTK भट्ठे हैं और बाजार उनकी अव्वल ईंटों से भरा है। इसके बावजूद हमारी सारी ईंटें बिक गईं, दाम जरूर कुछ कम मिला। 2006–07 के सीजन में हमें 1100 रुपये प्रति हजार मिला, जबकि BTK ईंटें रुपये 1500 प्रति हजार पर बिकीं।'

इन्दरजीत का VSBK

अखैराजपुर पेपुस के कार्यक्षेत्र में आता है, अतः TERI ने लोकमित्र के कार्यक्षेत्र में भी एक कारीगर मालिकाने का VSBK बनाने का निश्चय किया। वर्ष 2004 के अन्तिम महीनों में इस क्षेत्र से 5 उद्यमियों का चुनाव किया गया और उन्हें अखैराजपुर का VSBK दिखाने के लिये ले जाया गया। उनमें से प्रतापगढ़ जिले के पूरेकलंदर ग्राम निवासी इन्दरजीत वर्मा को VSBK लगाने के लिये चुना गया।

ईंटें कभी बेकार नहीं जातीं

सभी ईंटों के खरीददार होते हैं, केवल दामों में अन्तर आता है। उदाहरण के लिये अद्धा या खंजर (ज्यादा पक्की ईंटें) की बाजार में खूब माँग है। खंजर बड़ा मजबूत होता है और उसका उपयोग नींव डालने में या रास्ते बनाने में बहुत होता है। गुणवत्ता के बारे में भी विचार अलग–अलग होते हैं और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में इनमें अन्तर मिलता है। रंग और आवाज जैसी गुणवत्ता की परम्परागत कसौटियाँ आँकड़ों में नहीं बाँधी जा सकतीं, उनका माप मुश्किल है। श्री कमलाकांत पाण्डेय कहते हैं : 'मेरी VSBK ईंटों को बनारस के बाजार में अच्छा दाम नहीं मिला, क्योंकि अच्छी BTK ईंटों के रंग और आवाज का मुकाबला वे न कर सकीं। और फिर भी, बैंगलोर से आया उद्यमी इन ईंटों की गुणवत्ता से बड़ा प्रभावित था'। TERI के सचिन कुमार का कहना है कि 'पंजाब से लेकर गंगा–जमुना के दोआबे से बिहार तक गंगा की घाटी की मिट्टी चिकनी है और यहाँ छः तरह की ईंटों की पहचान है; किन्तु दक्षिण में केवल एक ही तरह की ईंट होती है क्योंकि वहाँ की मिट्टी साधारण है। उत्तर भारत की एक औसत श्रेणी की गुणवत्ता की ईंट दक्षिण की सबसे अच्छी ईंटों जितनी अच्छी होती है।'

इन्दरजीत भट्ठा कारीगर नहीं था, लेकिन वह कई साल BTK पर काम कर चुका था और उसे भट्ठा चलाने की विधि का काफी ज्ञान था। उसमें VSBK लगाने का बड़ा उत्साह था। और उसके पास भट्ठा लगाने के लिये जमीन भी थी। प्रधान का बेटा होने के चलते गाँव व आसपास के क्षेत्र में कुछ प्रभाव भी रखता था। पूर्वी उत्तर प्रदेश में उसे दूसरा VSBK उद्यमी बनाने में इन सब बातों की निर्णायक भूमिका रही।

इन्दरजीत की जमीन थोड़ी ऊँचाई पर थी और उस पर एक घर पहले से बना हुआ था (चित्र–23)। इन्दरजीत की जमीन की विशेषताओं और उस पर बने घर का पूरा फायदा उठाते हुए TERI ने VSBK का ऐसा नक्शा बनाया कि कम खर्च में उसका निर्माण हो सके।

फरवरी, 2005 में पूरेकलंदर में इन्दरजीत का VSBK शुरु हो गया (चित्र–24)। शुरु में ईंटों का रंग अच्छा न था और जल्दी टूट भी रही थीं। समस्या का स्रोत वहाँ की मिट्टी में था; उस मिट्टी से बनी कच्ची ईंटे जब तेजी से ऊँचे तापमान के क्षेत्र से गुजरतीं और तेजी से ठण्डी होतीं जैसा कि VSBK में लाजिमी है तो वे ठीक से पक नहीं पाती थीं। इस समस्या को सुलझाने के लिये एक दिन में कुल पकाई जाने वाली ईंटों की संख्या घटा दी गई। ईंटों के 11 समूहों की जगह 7 समूह ही लिये जाने लगे, नतीजा यह हुआ कि हर ईंट अब ऊँचे तापमान के क्षेत्र में ज्यादा समय गुजारती थी। ईंटों की गुणवत्ता में अच्छा सुधार हुआ, लेकिन अव्वल दर्जे की BTK ईंटों से अभी भी तुलना नहीं की जा सकती थी। कुल उत्पादन भी बहुत गिर गया – 3000 से 2000 ईंटें प्रतिदिन। इन बातों के चलते पहले साल इन्दरजीत को नुकसान उठाना पड़ा। किन्तु उसकी लगन प्रशंसनीय रही, उसने भट्ठा चलाना बन्द नहीं किया।

इन्दरजीत के अनुसार 'VSBK भट्ठा तो छोटा है, लेकिन इसे चलाना बहुत कठिन है। इसलिये जब लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि वे भी VSBK लगाना चाहते हैं, तो मैं कहता हूँ ''जल्दीबाजी मत कीजिए। हम लोगों के साथ कुछ समय काम कीजिए; VSBK लगाने के पहले ठीक से समझ लीजिए कि यह कैसे काम करता है और किन चुनौतियों से आपको मुकाबला करना होगा। यह भट्ठा चलाना कठिन काम है, लेकिन यह आपकी मेहनत का फल देगा।''

ईंट के ग्रामीण बाजार का अध्ययन

सन् 2004 में TERI ने निम्नस्तरीय आर्थिक श्रेणी के ग्रामीण उपभोक्ताओं के सन्दर्भ में ईंट बाजार का एक अध्ययन करवाया। प्रतापगढ़ के लालगंज, जौनपुर के बादशाहपुर और इलाहाबाद के कौड़ीहार प्रखण्डों में यह अध्ययन किया गया। यह अध्ययन लखनऊ की एक सलाहकार कम्पनी त्रिरत्न कन्सल्टेन्ट्स लिमिटेड ने किया। अध्ययन के चार मूल उद्देश्य थे–

चित्र 23: पूरेकलंदर VSBK का स्थान

चित्र 24: पूरेकलंदर का VSBK

ईंट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

1. ईंट खरीदते वक्त ग्रामीण उपभोक्ता के निर्णयों को प्रभावित करने वाली कसौटियों की पहचान करना।
2. विभिन्न श्रेणियों की ईंटों के बाजार के आकार का अनुमान लगाना।
3. विभिन्न गुणवत्ता की ईंटों की खरीद की मात्रा के साथ उनके स्रोतों और होने वाले इस्तेमाल का अनुमान लगाना।
4. सर्वेक्षण के गाँवों के मिस्त्रियों की सूची तैयार करना।

इस अध्ययन के निम्नलिखित स्पष्ट नतीजे निकले–

- ग्रामीण उपभोक्ता के लिये मकान बनाने के लिये ईंट का खरीदना जिन्दगी में एक बार होने वाला काम है; इसलिये, आर्थिक दृष्टि से कमजोर उपभोक्ता भी अच्छी गुणवत्ता की ईंट खरीदना चाहते हैं।
- रंग और आवाज ये गुणवत्ता की सबसे महत्त्वपूर्ण कसौटियाँ हैं।
- चूँकि इन क्षेत्रों में भट्ठा कारीगर समुदाय के लोग रहते हैं, यहाँ के लोगों में ईंट की गुणवत्ता के बारे में अच्छी जानकारी है।

अध्ययन के नतीजों ने इस बात में जोर भरा कि VSBK की ईंटों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये और प्रयोग व अनुसंधान की जरूरत है। VSBK को इस काबिल बनना चाहिए कि वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण उपभोक्ताओं की रंग और आवाज की कसौटी पर खरा उतरे।

बराबरी के सहभागी

मनोरमा और हरिशरन के VSBK की ईंटों पर 'MH' लिखा होता है; एक स्त्री और एक पुरुष द्वारा बराबरी की सहभागिता के उद्यम के लिये यह जायज ही है। मनोरमा देवी कहती हैं 'पहले सारे गाँव वाले मुझे 'हरिशरन की पत्नी' कहते थे, और मुस्कुराकर हरिशरन जोड़ देते हैं, 'अब गाँव वाले मुझे ''मनोरमा का पति'' कहते हैं'।

दृढ़ उद्यमी

शुरु से ही इन्दरजीत ने बड़ी लगन और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जिसका नतीजा उसके VSBK की सफलता में हुआ। उसने VSBK के निर्माण और फिर उससे ईंट निर्माण की प्रक्रियाओं में हमारे साथ कदम–से–कदम मिलाकर काम किया। उसने बड़े उत्साह और सृजन के मन से काम किया। समय के साथ उसका पूरा परिवार इस उद्यम में शामिल हो गया (चित्र–25)।

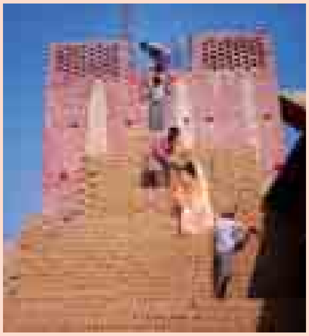

चित्र 25: ईंट निर्माण में कार्यरत इन्दरजीत का परिवार

इन्दरजीत की जमीन पर एक मकान है, जिसका इस्तेमाल उसका परिवार कभी–कभी निवास के रूप में करता है। इन्दरजीत के सुझाव पर निर्माण के खर्च को कम करने के लिये हमने मकान की एक दीवार का इस्तेमाल VSBK बनाने में कर लिया। बगल वाले एक कमरे को भी यों परिवर्तित कर लिया जहाँ पककर निकली ईंटों को धीरे–धीरे ठण्डा होने के लिये रखा जा सकता हो, जिससे उनकी गुणवत्ता में सुधार आये। कच्ची ईंटों को ऊपर तक पहुँचाने में आसानी हो इसके लिये मकान की छत और VSBK भट्ठी के ऊपरी हिस्से को जोड़कर एक छोटा–सा समतल स्थान बना लिया गया। इस तरह के नये–नये कामों के चलते भट्ठा चलाने में सुविधा हुई और कुल खर्च में भी कमी आई। पूरेकलंदर का VSBK तमाम बाधाओं के बावजूद चलता रहा, इसका सबसे बड़ा कारण तो इन्दरजीत की लगन ही है।

–राकेश जौहरी, TERI

आगे की चुनौतियाँ

TERI और सहभागी NGOs ने मिलकर पूर्वी उत्तर प्रदेश का अपना कार्य TSI दृष्टिकोण, यानि तकनीकी सामाजिक एकीकरण के दृष्टिकोण से किया है। यह एक धीमी प्रक्रिया है और परियोजना के सहभागियों से धीरज के साथ लगे रहने की माँग करती है। फिर भी नतीजे दिखने लगे हैं – संगठन फैल रहा है, समुदाय के सदस्यों में बदलाव लाने के प्रति आत्मविश्वास बढ़ रहा है तथा वे नये हुनर सीखने के लिये व समुदाय के हित में अपना ज्ञान दूसरों से बाँटने के लिये खुलकर सामने आ रहे हैं।

संगठन अब एक जन–संगठन से गतिशील ज्ञान संगठन में तब्दील हो रहा है, जो भट्ठा कारीगर समुदाय की सामूहिक विद्या और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता हो। यह गाँवों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का उत्प्रेरक साबित हो रहा है और सामाजिक व तकनीकी क्षमता विकास तथा ज्ञान विनिमय का प्रभावी माध्यम बन रहा है। चुनौती यही है कि BPVS को एक ऐसे ज्ञान संगठन के रूप में विकसित किया जा सके, जो कामगारों के सशक्तिकरण, आजीविका के विकल्पों में वृद्धि तथा क्षमता विकास जैसे उद्देश्यों के प्रति संवेदनशील हो। ऐसा करते वक्त अन्य ज्ञान आधारित संगठनों से सम्बन्ध बनाना जरूरी हो सकता है। विशेष करके क्षमता विकास की पहल का लक्षित समूह मिस्त्रियों का होना चाहिए, जो अपने अनुभव और समुदाय में सम्मान के चलते परिवर्तन के वाहक सिद्ध हुए हैं। फिर, ऐसे कल्पनाशील कार्यक्रमों की जरूरत है जो स्त्रियों के नेतृत्व को बढ़ावा देते हों। इसके अलावा, परियोजना समूह के सदस्यों की भी TSI के सिद्धान्तों और अभ्यास की समझ बढ़ाने के कार्यक्रम होने चाहिए।

कारीगर समुदाय की आजीविका और रहने की परिस्थितियों में सुधार के दृष्टिकोण से, जब भट्ठे बन्द होते हैं, उनके गाँवों में काम करने की जरूरत है। यह नहीं भूलना चाहिए कि ये कारीगर BTK भट्ठों पर पकाई का काम करते रहेंगे। BTK प्रौद्योगिकी आने वाले समय में भी ईंट निर्माण की सबसे प्रभावी और विस्तृत प्रौद्योगिकी रहने वाली है।

TERI के क्षमता विकास कार्यक्रमों के चलते बहुत सारे कारीगर BTK भट्ठों पर कार्यविधि के उत्तम तरीके (BOP) इस्तेमाल कर रहे हैं। फलस्वरूप वे कोयले की खपत कम करके भट्ठों की ऊर्जा कार्यक्षमता बढ़ा रहे हैं तथा प्रदूषण कम कर रहे हैं। यह भी प्रकाश में आया है कि TERI के प्रशिक्षित कारीगरों की विकसित दक्षतायें BTK मालिकों द्वारा पहचानी जा रही हैं तथा उसके चलते उनके पारिश्रमिक में भी बढ़ोत्तरी हुई है। इसलिये इन क्षमता विकास कार्यक्रमों को जारी रखा जाना चाहिये। TERI द्वारा प्रशिक्षित कारीगरों के लिये प्रमाण–पत्रों की एक सुव्यवस्थित प्रणाली बनाई जानी चाहिये; इससे भट्ठा मालिकों के बीच उनका तकनीकी सम्मान बढ़ेगा और वे अधिक पारिश्रमिक हासिल कर सकेंगे।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में कारीगर के मालिकाने में चला VSBK यह सिद्ध कर चुका है कि VSBK एक स्वच्छ और ऊँची ऊर्जा कार्यक्षमता वाला भट्ठा है, लेकिन ऊँची गुणवत्ता की ईंटें बनाने की क्षमता मिट्टी की गुणवत्ता व कच्ची ईंटों पर निर्भर करती है, इस बात पर निर्भर करती है कि ये ईंटें VSBK के तेज गति के गरम करने और ठण्डा होने के चक्र के अनुकूल हैं या नहीं। इसलिये VSBK पूर्वी उत्तर प्रदेश की बढ़िया मिट्टी से ऊँची गुणवत्ता की ईंटें बना सके इसके लिये ऐसे वैज्ञानिक अनुसंधान की जरूरत है जिसके प्रयोगों में मिस्त्री शामिल हों। यह महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि बाजार के अध्ययन का निष्कर्ष भी यही है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के गरीब ग्रामीण उपभोक्ता भी अव्वल ईंटें खरीदना पसन्द करते हैं।

अन्य परम्परागत उद्योगों की तरह ही भारत का ईंट उद्योग भी परिवर्तन से कतराता है। फिर भी, तकनीकी बाध्यताओं, पर्यावरणीय चिन्ताओं और बाजार की शक्तियों के दबाव में वैश्वीकरण के इस युग में परिवर्तन तो आयेगा ही। चुनौती यह है कि तकनीकी परिवर्तनों के साथ कामगारों, कारीगरों, उद्यमियों व अन्य जुड़े हुए लोगों के हित सुरक्षित रखे जा सकें।

ईंट-भट्ठा कारीगर समाज के साथ कार्य

ईंट उद्योग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। बुनियादी ढाँचे और व्यावसायिक व निर्माण क्षेत्र की बढ़ती जरूरत के चलते ईंट की माँग बढ़ती जा रही है; इसलिये ईंट निर्माण का क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले दसों लाख प्रवासी मजदूरों और उनके परिवार के लिये आजीविका का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत बना रहेगा। अतः ईंट उद्योग में परिवर्तन के किसी भी दखल को उन सब बड़े सामाजिक–आर्थिक प्रश्नों पर भी ध्यान देना होगा जो प्रवास प्रभावित करते हैं। ये प्रश्न अधिकांश भूमिहीनता, खेती से होने वाली आय में सतत कमी, गरीबी व सामाजिक भेदभाव, गाँवों में बुनियादी ढाँचे का अभाव व आजीविका के विकल्प न होने से सम्बन्ध रखते हैं। दूरगामी दृष्टि से देखें तो ईंट बनाने के लिये मिट्टी और ईंधन की उपलब्धता की भी सीमायें हैं। ईंट भट्ठों पर प्रदूषण कम करने का दबाव बढ़ेगा। परम्परागत उद्यमी ईंट बनाने की नई तकनीक अपनाने के लिये और नये–नये उत्पाद, जैसे खोखले खण्ड व छिद्रयुक्त ईंटें बनाने के लिये बाध्य होंगे। परम्परागत हुनर में दक्ष – जैसे पूर्वी उत्तर प्रदेश के भट्ठा कारीगर – नई तकनीकें सीखने के लिये बाध्य होंगे।

इन बड़ी–बड़ी चुनौतियों का मुकाबला एक समेकित प्रयास से ही हो सकता है। इस प्रयास में सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी क्षमता विकास तथा नीतिगत स्तर व तृणमूल स्तर के घटक शामिल होने होंगे। एक ज्ञान प्रबन्धन की रणनीति बनानी होगी। ज्ञान के वे नक्शे बनाने होंगे, जो ज्ञान की जरूरतों और उसके स्रोतों की पहचान में मदद करें। इससे ईंट उद्योग से जुड़े सभी हितों का ताना–बाना बनाने के लिये एक नई चौखट बन सकेगी, जो पूर्वी उत्तर प्रदेश में ईंट उद्योग में भावी कार्यों को दिशा दे सके।

यह दस्तावेज TERI (द एनर्जी एण्ड रिसोर्सेस इन्स्टीट्यूट) द्वारा भट्ठा कारीगर समुदाय में, जो उत्तर भारत के ईंट भट्ठों पर पथाई का काम करते हैं, सकारात्मक सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के प्रयास का वर्णन करता है। यह कार्य उस क्षेत्र की संस्थाओं PEPUS (पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी उत्थान समिति), लोकमित्र और मिथा आश्रम की सहभागिता व SDC (स्विस एजेन्सी फार डेवलपमेन्ट एण्ड कोऑपरेशन) के समर्थन से किया गया। अधिकांश भट्ठा कारीगर अपने परिवारों के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में रहते हैं – इलाहाबाद, प्रतापगढ़ और रायबरेली। ईंट निर्माण के सीजन में, जो हर वर्ष 7–8 महीने चलता है, ये कारीगर दूर–दराज के भट्ठों पर कठिन परिस्थितियों में काम करने जाते हैं। वे अपने पीछे महिलाओं, बच्चों और वृद्ध जनों को आर्थिक तंगी व अनुकूल सामाजिक ढाँचे के अभाव में रोजमर्रे की कठिनाइयों का सामना करने के लिये छोड़ जाते हैं।

TERI और उसकी सहभागी संस्थाओं ने 'समस्याओं के हल' देने का सामान्य तरीका न अपनाकर, भट्ठे पर और गाँव में दोनों ही जगह सशक्तिकरण के मार्फत सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का प्रयास किया है। इसमें कारीगरों के परम्परागत ज्ञान व हुनर को पहचानने और वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान से उसका तालमेल बैठाने की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परियोजना ने BPVS (भट्ठा परिवार विकास संगठन) बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। BPVS एक समुदाय आधारित संगठन है जो समुदाय के आंतरिक और बाहरी मसलों को हल करने के प्रयास करता है।